श्री चितलवाना से
श्री शंखेश्वर तीर्थ
छ री पालित
संघ संपन्न

श्री महासमुन्द से
श्री शिखरजी महातीर्थ
का संघ सम्पन्न
खरतरगच्छ इतिहास
का अनूठा पृष्ठ

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला का मासिक मुख-पत्र

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

▪ वर्ष : 10 ▪ ▪ अंक : 11 ▪ ▪ 5 फरवरी : 2014 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

कुशल वाटिका प्रथम वर्षगांठ संपन्न

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	07
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	10
5. श्रमण चिन्तन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	13
6. तत्त्वावबोध	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	17
7. जैनों को अल्पसंख्यक मान्यता	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	19
8. समाचार दर्शन	संकलन	30
9. जहाज मंदिर पहेली 91 का उत्तर		46
10. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-94	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	47
11. जहाज मंदिर पहेली 92 का उत्तर		49
12. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	50

आगम मंजूषा

परमात्मा महावीर

बहिरातम किसे कहते हैं? कौन सी आत्मा बहिरात्मा है? उसका विश्लेषण क्या है? किस आत्मा को हम बहिरात्मा कहें और किसे हम परमात्मा कहें? कौन सी कसौटी है जिस पर कसकर इन्हें इस प्रकार बहिरात्मा और अन्तरात्मा घोषित किया जाता है।

आत्मा की बुद्धि से पर-पदार्थों को ग्रहण किया जाये। संक्षिप्त रूप से यही हमारी बहिरात्मा का लक्षण है

अक्खाणि बहिरप्पा अंतर अप्पा हु अप्पसंकप्पो।

(मोक्षपाहुड)

इन्द्रियों में आसक्ति ही बहिरात्मा है। अन्तरंग में आत्मानुभव रूप आत्म-संकल्प ही अन्तरात्मा है।

जन्म दिवस की बधाई

पिछले 15 वर्षों से जहाज मंदिर ट्रस्ट को अपनी अनवरत सेवाऐं प्रदान कर रहे संस्थान के युवा महामंत्री डॉ श्री यू.सी. जैन के 79 वर्ष पूर्ण होने पर तथा 80वें वर्ष प्रवेश पर (13फरवरी 2014) जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक हार्दिक बधाई दादा गुरुदेव से इस प्रार्थना के साथ कि आप सदा स्वस्थ रह कर इसी प्रकार जहाज मंदिर की सेवाऐं करते रहे।

- जहाज मंदिर परिवार

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 10 अंक : 11 5 फरवरी 2014 मूल्य 20 रू.

संयोजन : आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.

अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया

महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ	: 7,000 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि ICICI की किसी भी शाखा में

SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST

BANK - ICICI JALORE

ACCOUNT NO. 065301000256

IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)

फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451

E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www.jahajmandir.com

www.jahajmandir.org

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसा व्यक्ति मिलना मुश्किल है, जिसने अपने जीवन में कभी कोई गलती न की हो!

ऐसा व्यक्ति भी मिलना मुश्किल है, जो कभी अपने जीवन में किसी गलतफहमी का शिकार न हुआ हो!

इन दोनों ही प्रकार की स्थितियों और उसके परिणामों का सामना व्यक्ति को करना ही पडता है।

अपनी किसी गलती के कारण उसका दुष्परिणाम जब उसे मिलता है, तब अपने मन में वह पश्चात्ताप करता है, वह दु:खी नहीं होता। क्योंकि वह बहुत अच्छी तरह समझता है कि यह मेरी ही गलती का परिणाम है। न करता गलती तो मुझे यह दुष्परिणाम नहीं मिलता। वह अपनी गलती के लिये पछताता है और भविष्य के लिये सावधान भी हो जाता है।

पर जब उसे गलती नहीं करने पर भी उसकी सजा भुगतनी पडती हो, तब वह भयंकर रूप से झुंझला उठता है।

इसमें दो बातें हो सकती है। या तो **कौए का बैठना और डाली का टूटना** जैसी परिस्थिति के कारण उस पर आरोप आ गया हो! या द्वेषात्मक मानसिकता के कारण जानबूझकर किसी व्यक्ति के द्वारा उसे गलत ठहराया जा रहा हो!

इन दो प्रकार की स्थितियों में व्यक्ति अपना संतुलन कैसे बनाऐं रखे, यह बहुत बडा प्रश्न है।

इन तीन प्रकार की स्थितियों में हमारा प्रतिभाव क्या और कैसा होना चाहिये!

– गलती की है तो स्वीकार करना चाहिये।

– गलतफहमी के शिकार हुए हो तो उसका स्पष्टीकरण करने का पुरूषार्थ करना चाहिये; बजाय द्वेष करने के! क्योंकि भीतर में पैदा हुआ द्वेष नई गलतियों का आधार बन जायेगा।

द्वेष भरी मानसिकता के कारण कोई व्यक्ति जब जबरन आरोपी बनाता है, तो उस समय अत्यन्त धीरज से उस व्यक्ति के द्वेष को दूर करने का पुरुषार्थ करना चाहिये। क्योंकि उसके भीतर में पैदा हुआ द्वेष किसी न किसी तुम्हारी गलती या गलतफहमी का ही परिणाम है।

वस्तुत: दो ही बातें सारी दुनिया को परेशान करती है। 1. गलती 2. गलतफहमी! द्वेष, क्रोध, तनाव, टकराव, भटकाव सब इसी के परिणाम है।

गलती को स्वीकार करना है। और गलतफहमी का स्पष्टीकरण करना है।

गुरुदेव की कहानियाँ

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

श्रद्धा का अभिषेक

राजन! इसमें हमारा दोष नहीं, दोष भूमि का है। यह भूमि व्यंतर की है और वह व्यंतर बत्तीस लक्षणयुक्त किसी मानव की बलि लिये बिना संतुष्ट नहीं हो सकता। इस चित्रशाला के दरवाजे को स्थिर रखने का एक ही उपाय है, आप गुणयुक्त मानव बलि की व्यवस्था कीजिये। मुहूर्त आदि सब यथोचित है। ज्योतिषी ने उत्तर दिया।

राजा श्रेणिक ने अपने राज्य की राजधानी राजगृही की यथायोग्य व्यवस्था कर मुंह बोलती चित्रशाला बनवाई थी। चित्रशाला इतनी अद्‌भुत बनी थी कि दर्शक नकली और असली की बात भूलकर उन्हें पकड़ने को हाथ फैलाते। राजा श्रेणिक भी चित्रशाला देखकर परम आनन्दित हुआ।

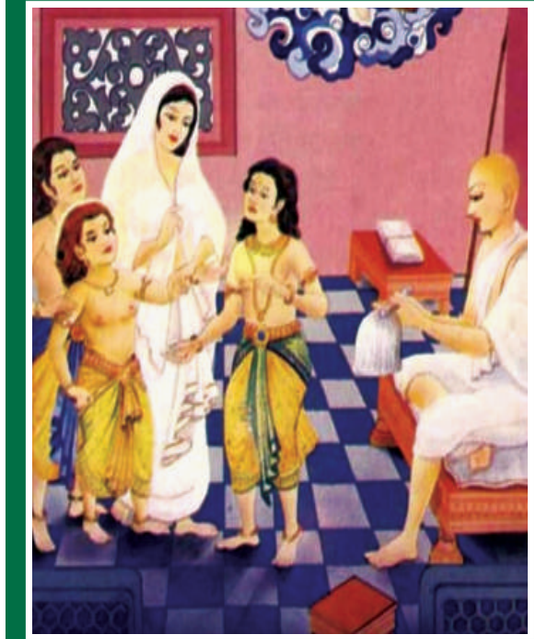

उसने चित्रकारों को प्रोत्साहित किया और उससे भी सुन्दर चित्रशाला का दरवाजा बनाने का आदेश दिया। चित्रकार राजा से पैसा और सम्मान दोनों पाकर और भी अधिक उत्साह से दरवाजे के निर्माण में जुट गये।

दरवाजा जब तैयार हो गया तो यथास्थान उसे व्यवस्थित कर दिया गया पर दुर्भाग्य! दूसरे ही दिन प्रात: यह समाचार राजा श्रेणिक को मिले कि दरवाजा गिर गया है। राजा ने उससे भी सुन्दर और मजबूत दरवाजा तैयार करवाया पर राजा का सपना वह भी पूरा नहीं कर सका।

राजा परेशान और दु:खी हो गया। उसने ज्योतिषियों को बुलाकर उन पर ही सारा दोष डाल दिया। तब उन्होंने कहा कि यह भूमि ही अशुद्ध है अत: या तो होम करना होगा अन्यथा दरवाजा कभी भी स्थिर नहीं रह पायेगा।

राजा विचार में पड़ गया। अभी-अभी मैंने राज्य व्यवस्था संभाली है और अभी से इस प्रकार के कुकृत्य करूँगा तो प्रजा भड़क उठेगी। बत्तीस लक्षणों का यह पुरुष कहाँ मिलेगा और मिलेगा तो उसे देगा कौन? मेरे इन कृत्य का अनुमोदन भी कौन करेगा? क्या करना चाहिये? बलि तो देनी ही होगी क्योंकि बलि के अभाव में व्यंतर संतुष्ट नहीं होगा और व्यंतर जब तक संतुष्ट नहीं होगा तब तक दरवाजा स्थिर नहीं रहेगा और जब तक दरवाजा स्थिर नहीं होगा तब तक मेरा मन भी स्थिर नहीं होगा। क्या करूं?

भट्टजी ने सुझाव दिया- राजन्! परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। आप गाँव में उद्‌घोषणा करवा दीजिये कि बालक के बराबर तोलकर सोना दिया जायेगा। इस लालच में शायद कोई अपना बालक बेच दे।

राजा के मस्तिष्क में भी यह बात जम गयी। उसने तुरन्त उद्‌घोषणा करवा दी। राजा ने यह भी निर्देश दे दिया- उद्‌घोषणा तब तक जारी रहे जब तक लक्ष्य तक पहुँचे नहीं।

00000

–माँ मुझे मत बेचो। मैंने क्या अपराध किया है? मैं पैसा कमाकर लाऊँगा। मुझे मत बेचो, बिलख उठा अमर। तुझे बेचूं नहीं तो क्या करूं? राजा तुझे तोलकर इतना सारा सोना दे रहा है। इतना तो तू समस्त जीवन में भी कमाकर नहीं ला सकता। अगर अर्थोपार्जन करवाना ही है तो बच्चों की कतार तेरे अलावा भी बहुत लम्बी है।

पिताजी! आप तो बचाओ! आप तो नित्य कहते थे अमर! तू मुझे सबसे प्रिय है फिर आप चुप क्यों हैं? मैं आपकी खूब चरण सेवा करूँगा, खूब आपका ध्यान रखूंगा। आप मुझे मत बेचो। अपने पिता के पांवों को कसकर पकड़ते हुए अमर ने गुहार की।

बेटा! मैं क्या करूँ? जब तेरी माँ ने ही तुझे बेचने का निर्णय कर लिया है तो मैं कैसे बचा सकता हूँ? माँ ने जन्म दिया है अत: पहला अधिकार तो माँ का ही होता है। अगर माँ बेचने से इन्कार कर दे तो तेरा बचाव संभव है। पत्नी का गुलाम बाप धीमे से बोला।

माँ! क्या धन आपको इतना प्यारा है कि उसके बदले अपने कलेजे के टुकड़े को जान-बूझकर मारने के लिए बेच देगी? माँ! क्या तुम्हारा सारा वात्सल्य समाप्त हो गया है? माँ तो अपने पुत्र को देखकर ही तृप्त हो जाती है लेकिन तुम अपने ही हाथों अपने बेटे को कसाई के हाथों सौंपने को तैयार हो गयी! माँ! तुम इतिहास के इस तथ्य को झुठला रही हो कि बच्चे की आँख का एक आँसू माँ का खून होता है। साहस से अमर ने माँ को उसकी ममता याद दिलानी चाही।

मुझे उपदेश मत दे। यह सारी नाटकबाजी बंद कर और चुपचाप इनके साथ चला जा। तुम्हारे भाइयों की फौज इतनी लम्बी है कि मैं सबकी पेटपूर्ति नहीं कर सकती। जा, दूर हो जा, मेरी नजरों से।

बालक की आँखें बरस पड़ी। वह माँ-बाप की उपस्थिति में भी अनाथ था। एक कसाई भी अपने हाथों अपनी औलाद की बलि नहीं देता पर वह क्या कर सकता था? बाड़ ही जब खेत की सुरक्षा न कर, उसे खाने लगे तो रक्षण कौन करे!

अमरकुमार ने समीप खड़े चाचा-चाची, समस्त परिवार से विनती की कि मुझे बचा लो पर कोई बचाने को तैयार नहीं हुआ। सभी ने कहा- जब माँ-बाप स्वयं बेच रहे हैं तो हम क्या कर सकते हैं?

माँ भद्रा ने कोतवाल से कहा- देख क्या रहे हो? ले जाओ इसे और दे जाओ मुझे सोना। कोतवाल ने सोना तोला तथा प्रकृति और धन दोनों से निर्धन रिषभदत्त के बत्तीस लक्षणयुक्त पुत्र अमर कुमार को हाथ पकड़कर घसीटने लगा।

अमरकुमार ने सभी बड़े-बड़े वाले श्रेष्ठिजनों से जीवन-भिक्षा की याचना की पर सभी ने उसे निराश करते हुए कहा- अगर अन्य किसी ने मंगवाया हो तो हम तुझे बचा सकते हैं पर तुझे तो साक्षात् सम्राट ने बुलाया है। अब तुम्हारे ऊपर तो सम्राट का हक है। सम्राट के अधिकार को हम कैसे चुनौती दे सकते हैं?

अमर क्या कहता? जब उसके अपने भी दुश्मन हो गये तो अन्य से वह क्या आशा कर सकता था? उसकी सारी आशाएं धूमिल हो गई। वह रोता-चीखता, विनती करता राज दरबार में पहुँचा।

(क्रमश:)

मांडवला से शिखरजी का संघ

मांडवला से श्री सम्मेतशिखरजी, शत्रुंजय आदि महातीर्थों के लिये सूरज मोहन एक्सप्रेस ट्रेन द्वारा मांडवला निवासी शा. मोहनलालजी वस्तीमलजी दांतेवाडिया परिवार की ओर से संघ का आयोजन किया गया। ता. 12 जनवरी को मांडवला से प्रस्थित यह संघ पावापुरी, गुणायाजी, सम्मेतशिखरजी, कच्छ भद्रेश्वर, नागेश्वर, मोहनखेडा, पालीताना आदि तीर्थों की यात्रा करता हुआ ता. 5 फरवरी को मांडवला पहुँचा। जहाँ उनका भव्य स्वागत किया गया। ता. 4 फरवरी को पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री हेमप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में तीर्थमाला का विधान संपन्न हुआ। श्री मोहनलालजी दांतेवाडिया जहाज मंदिर से पूरी तरह से जुडे हैं। ट्रस्ट के उपाध्यक्ष है। उन्हें जहाज मंदिर परिवार की ओर से बधाई।

प्रीत की रीत

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्री सुमतिनाथ स्तवन

ताहरी शुद्धता भास आश्चर्य थी,
उपजे रूचि तेणे तत्व ईहे।
तत्वरंगी थयो दोषथी उभग्यो,
दोष त्यागे ढले तत्व लीहे, अहो.॥८॥

हे परमात्मन्! आपकी शुद्ध स्वभावदशा का ज्ञान होते ही आश्चर्य की अनुभूति होती है। स्वयं में उसी प्रकार की रूचि जागृत हो जाती है। जैसे-जैसे तत्वरूचि बढ़ती जाती है वैसे-वैसे तत्वजिज्ञासा विस्तृत होती जाती है। हिंसा कषायादि दोष स्वत: ही दूर हो जाते हैं।

प्रस्तुत पद्य भक्ति के परिणाम का दर्शन कराता है। जीव का स्वभाव है- सुख को पाना। जब उसे असीम आनंद मिले तो वह क्यों सीमित आनंद से तृप्त होगा। जीव अनंत शक्ति का स्वामी है। उसे अनंत में ही वास्तविक आनंद आ सकता है। भौतिक सुख उसे असीम आनंद नहीं दे सकता, अत: वह चाहता है कि कोई उसे ऐसी विधि बता दे, जिससे वह असीम को उपलब्ध हो सके। जब वह परमात्मा की शक्ति, उनके वैभव से अवगत होता है तो उसके भीतर उसी को पाने की तड़फ जाग उठती है। यह शाश्वत सत्य है कि परमात्म भक्ति, उनका सानिध्य वह आनंद उपलब्ध करवा सकता है। जब उसमें स्वयं को पाने की उत्कट अभिलाषा जागती है तो स्वत: ही दुर्गुणों से उसका तादात्म्य टूट जाता है। तत्वरूचि में ही आनन्द अनुभूत होने लगता है क्योंकि सुख वास्तव में पदार्थ में न होकर हमारे मस्तिष्क में ही है। सुखानुभूति का मुख्य कारण है- रसायन! शोक, भय, क्रोध, ईर्ष्या, संताप आदि समस्त भावों का कारण हमारे भीतर में बहते रसायन हैं। हम अपने भीतर बहते इन रसायनों पर ध्यान नहीं देते और मात्र ब्राह्य परिस्थिति को बदलना चाहते हैं जो असंभव है।

हम सुनते हैं कि परमात्मा के समवशरण में शेर-बकरी एक साथ बैठते थे। सुनकर बहुत अचरज होता है कि ऐसा कैसे संभव है। पर आज विज्ञान ने प्रयोगशाला में इसे सिद्ध कर दिया है। चूहें को देखते ही बिल्ली उस पर झपटती है और बिल्ली को देखते ही चूहा भाग जाता है परन्तु विद्युत का प्रयोग हुआ। 'इलेक्ट्रोड' लगाकर बिल्ली के आक्रांत भाव को मूर्च्छित कर दिया गया। अब चूहा सामने जरूर दिखता है पर बिल्ली शांत रहती है। परमात्मा के अंतर में बहती करूणा उनके समीप आने वाली प्रत्येक चेतना को शांत कर देती है।

मस्तिष्क के तीन भाग है- दायां, बायां व पीछे का! एक है कल्पना का, दूसरा है चिंतन का और तीसरा हिस्सा आज भी रहस्यमय है। यह रहस्यमय भाग ही सबसे महत्वपूर्ण है। इसका उद्घाटन होता है- ध्यान साधना, भक्ति अथवा समर्पण से। जिस दिन यह भाग जागता है मानव स्वत: ही सम्यक्दृष्टि का स्वामी होकर असीम सुखों को उपलब्ध हो जाता है। जब आनंदधारा अपने अंतर उपलब्ध हो जाती है तो हिंसा कषायादि दुर्गुण स्वत: ही समाप्त हो जाते हैं।

शुद्ध मार्गे वध्यो, साध्य साधन सध्यो,
स्वामी प्रतिछंदे सत्ता आराधे।
आत्म निष्पत्ति तिहां साधना नवि टिके,
वस्तु उत्सर्ग आतम समाधे, अहो.॥ ९॥

जैसे परमात्मा ने निर्दोष साधना द्वारा मोक्ष सत्ता को प्राप्त

किया, वैसे ही शुद्ध मार्ग की ओर बढ़ते साधक को मोक्ष प्राप्त करने का पुरुषार्थ करना चाहिये। जैसे ही आत्मानंद की प्राप्ति हुई कि स्वत: ही साधन छूट जाते हैं। जीव जब उत्सर्ग विधि से आत्म समाधि को प्राप्त होता है तो सारे आलंबन पीछे रह जाते हैं।

ऊपर मंजिल पर जाने के लिये मनुष्य को किसी न किसी प्रकार की सीढ़ी का आलंबन लेना पड़ता है और जैसे ही मंजिल आती है कि सीढ़ी स्वत: छूट जाती है। चित्त की निर्मलता के लिये साधना की अनेक विधियाँ प्रतिपादित की गयी हैं। इन उपायों से चित्त पवित्र बनता है, उसके सारे विजातीय तत्त्व बाहर निकल जाते हैं। दो मार्ग है- एक उत्सर्ग का और दूसरा अपवाद का! जो सदैव उपयोग में आता है वह उत्सर्ग मार्ग है, इसे राजमार्ग भी कहते हैं। परन्तु जिसका प्रयोग न चाहते हुए भी करना पड़ता है, वह अपवाद मार्ग है।

जब साधक साध्य को अर्थात् साक्षात् आत्मा का दर्शन कर लेता है तो वह स्वयं परमात्मा बन जाता है। क्योंकि शुद्ध चेतना में और परमात्मा में कोई अंतर नहीं है। जैन दर्शन की यह अनूठी और अद्भुत विशिष्टता है कि इसने अर्हत् बनने का अधिकार एक व्यक्ति को न देकर गुणों को दिया है। जो भी अपने मोह को विच्छिन्न कर देता है वह परमात्मा हो जाता है। परमात्मा की भक्ति अर्थात् आत्मा की भक्ति और आत्मा की भक्ति अर्थात् प्रभु की भक्ति! आत्म-समाधि आत्मा को कृतकाम बना देती है।

माहरी शुद्ध सत्तातणी पूर्णता,
तेहनो हेतु प्रभु तूंही साचो।
देवचन्द्रे स्तव्यो मुनि गणे अनुभव्यो,
तत्व भक्ते भविक सकल राचो, अहो. ॥ १०॥

मैंने अपनी जो शुद्ध सत्ता उपलब्ध की, उसमें आप ही मुख्य कारण हैं। अनेक मुनिजनों ने आपके गुणों का अनुभव किया। देवचन्द्र स्तुति के साथ यह प्रेरणा देते हैं कि प्रभु की तत्व भक्ति में सभी भव्यात्माऐं निमज्जन करे।

इस स्तवन की यह अंतिम पद्य रचना है। श्रीमद्जी इसमें अपनी उपलब्ध शुद्धता को प्रभुभक्ति का परिणाम बताते हैं। मानव की यह प्रकृति है कि वह सदैव प्राप्ति का श्रेय स्वयं लेना चाहता है और असफलता किसी दूसरे के सिर मढ़ने का प्रयत्न करता है। इसमें मुख्य कारण है, उसका अनादिकाल का पोषित अहंकार! अहंकार कभी-कभी तो इतना बढ़ जाता है कि मानव सच्चाई को भी झुठला देता है। दूसरों के बड़प्पन को इसीलिये स्वीकार नहीं कर पाता कि इससे वह समाज में कम प्रतिष्ठित होगा। 'मैं' यह भाव तारने वाला भी है और मारने वाला भी है। अस्तित्व के परिचय के लिये प्रयुक्त अहं अर्हं बनाता है तो गर्व के भावों का अहं गिरावट का कारण बनता है। अपनी सीमा का परिचय होने के बाद व्यक्ति अहंकार को पराजित कर सकता है, वह विनम्र हो सकता है। जो विनम्र होता है वही अपनी श्रेष्ठता का श्रेय उपकारियों को दे सकता है। बडी कठिन साधना है यह! पर अहंकार पर विजयी होने के बाद यह घटना सहज हो जाती है।

जयपुर खरतरगच्छ संघ के चुनाव

अध्यक्ष

वरिष्ठ उपाध्यक्ष

संघ मंत्री

जयपुर खरतरगच्छ संघ के हुए चुनावों में श्री कुशलचंदजी सुराणा अध्यक्ष चुने गये। श्री विजयकुमारजी संचेती वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री नवरतनमलजी श्रीश्रीमाल उपाध्यक्ष, श्री अनूपकुमारजी पारख संघ मंत्री, श्री राजेन्द्रकुमारजी बोहरा सहमंत्री एवं श्री शिवराजसिंहजी भंडारी कोषाध्यक्ष चुने गये। कार्यकारिणी में इन पदाधिकारियों के अलावा 25 सदस्य चुने गये। कुल 31 सदस्यों की कार्यकारिणी ने शपथ ग्रहण की।

24
संस्मरण

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

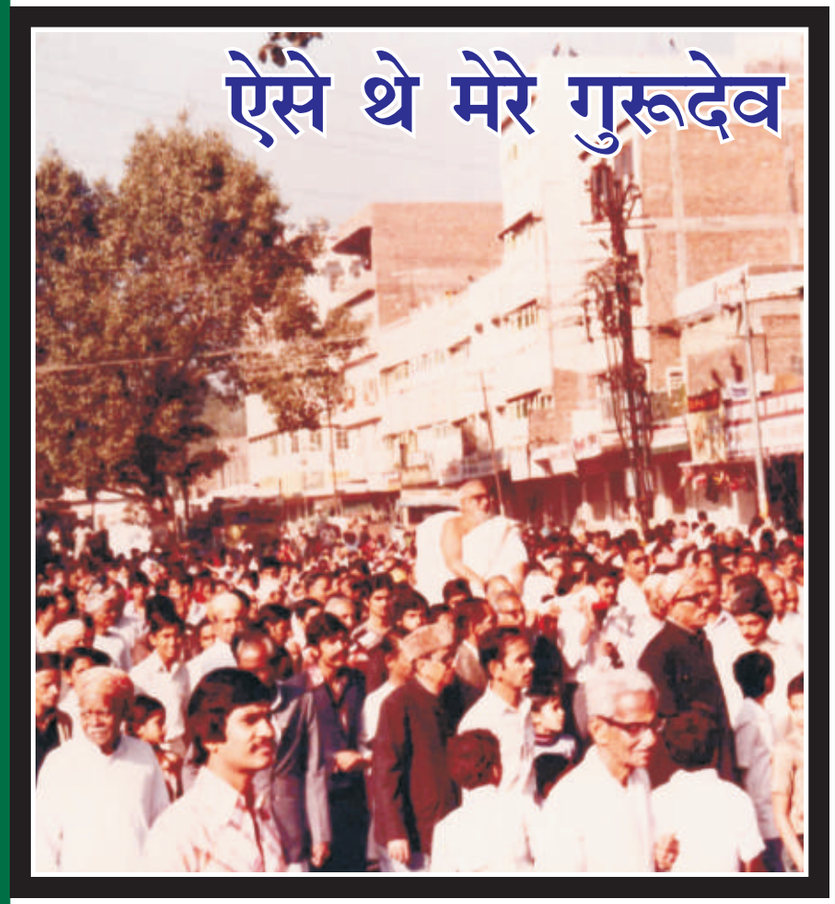

सन् 1968 की बात है। पूज्य गुरुदेवश्री का चातुर्मास ब्यावर में था। पूज्यश्री के प्रवचनों को श्रवण करने के लिये जैन जैनेतर सारा समाज उपस्थित रहता था। जैन समाज का मंदिरमार्गी समुदाय तो आता ही था, पर स्थानकवासी और दिगम्बर समाज भी बडी संख्या में उपस्थित होता था। माहेश्वरी, अग्रवाल, ब्राह्मण समाज भी पूज्यश्री के प्रवचनों को अत्यन्त श्रद्धा से श्रवण किया करता था।

उस समय गोरक्षा का आन्दोलन पूरे भारत में चल रहा था। भारत की आजादी के समय महात्मा गांधी द्वारा की गई घोषणा का पालन हुआ नहीं था। महात्मा गांधी ने कहा था- भारत के आजाद होने की देर है। आजादी मिलते ही सबसे पहला कानून गोरक्षा का होगा।

पर सत्ता प्राप्त होते ही सत्ताधीशों के स्वर बदल गये थे। इस कारण भारतीय संस्कारी प्रजा को आन्दोलन करना पडा था। ता. 10 व 11 सितम्बर 1968 को दो दिवसीय आन्दोलन का कार्यक्रम ब्यावर में रखा गया था।

इस आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे- चारों पीठों के शंकराचार्य, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, करपात्रीजी एवं अनेक हिन्दु संत!

ब्यावर में बडी सभा का आयोजन था। लगभग 50 हजार से अधिक लोगों के एकत्र होने की संभावना थी। श्री शंकराचार्यजी का वह चातुर्मास ब्यावर में ही था। इधर पूज्य गुरुदेवश्री का भी वहीं चातुर्मास था। पूज्यश्री की विद्वत्ता, प्रवचन शैली व भारतीय संस्कारों व अध्यात्म भावों से संयुत विचार-प्रवाह की चर्चा पूरे ब्यावर में थी।

आन्दोलन आयोजक संतों द्वारा पूज्यश्री को वहाँ पधारने की विनंती की गई। और निवेदन किया गया कि 15 से 18 मिनट का प्रवचन आपको देना है।

सारा जैन समाज आनन्दित हो उठा था। इतनी बडी विशाल सभा में एक जैन मुनि का प्रवचन हो तो समाज के लिये यह गौरव की बात होती है। समाज पूज्यश्री की प्रवचन क्षमता से पूर्णतया परिचित था।

पूज्यश्री ने यह घटना मुझे कई बार सुनाई थी। उन्होंने कहा था- मैं उस रोज स्वाभाविक रूप से द्वन्द्वसे भरा था। इतनी बडी सभा है। जैनों और श्रद्धालुओं की सभा में बोलना अलग बात है। यह सभा तो विद्वानों की सभा है। बडे बडे पंडित हजारों की संख्या में उपस्थित हैं।

उन्होंने मुझे बताया- मैंने बस! अपने इष्ट कुशल गुरुदेव का नाम लिया। और आगे का सारा कार्यक्रम उन्हें अर्पण कर दिया। गुरुदेव से कहा- मैं नहीं जा रहा हूँ, आप जा रहे हैं। मैं नहीं बोलूंगा, आप बोलेंगे। अब आगे आप जानो।

ब्यावर का समाज कहता है- पूज्यश्री ने जब अपनी बात 15 मिनट में समेटनी शुरू की तो स्वयं शंकराचार्यजी ने कहा- आपको आधा घंटा और बोलना है। शंकराचार्यजी का कहना था और लाखों लोगों की उस सभा ने तालियों की गडगडाहट के साथ पूज्यश्री के वक्तव्य को बधाया।

उस सभा में दिया गया पूज्यश्री का जोशीला प्रवचन आन्दोलन की स्मारिका में हूबहू प्रकाशित हुआ था। जब प्रवचन की उस शब्दावली को आज पढते हैं तो रोमांच हो आता है। रक्त प्रवाह तीव्र होने लगता है। जीवदया के विषय में दिया गया पूज्यश्री का वह क्रान्तिकारी वक्तव्य था।

अनुमोदना

हमारी प्रिय लाडली कुमारी **सीमा छाजेड़**
ने गृहस्थ जीवन को त्याग कर संयम पंथ को
अंगीकार कीया है हमारा परिवार
कोटि कोटि वन्दन करता है ।

अनुमोदक

शांतीदेवी-मांगीलाल, (मंत्री जहाज मंदिर माण्डवला)
मीना देवी-मुलचंद, दीपक, भावना समस्त
बेटा-पोता चिन्तामणदासजी संखलेचा परिवार, बाड़मेर | मो. 94145 29795

फर्म : चिन्तामणदास मांगीलाल, लक्ष्मी बाजार, बाड़मेर

Diploma®
Metal Industries

For Better Cooking & Economy

Mfg. Of Stainless Steel Utensils

B-7, RAVI ESTATE, AMBIKA NAGAR, ODHAV
Ahmedabad-382415 (Gujarat)

B.L.Bothra 09426170801 Ramesh 09427031294
Jitesh 09427031295 Sunil 09429021264

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

सेयं ते मरणं भवे

श्रमण चिन्तन के द्वारा हम सभी संयम की गंगा में निमज्जन कर रहे हैं।

यह दशवैकालिक सूत्र है ही अनूठा, निराला और अलौकिक। जितना अवगाहन करे, उतने ही निष्कर्ष के मोती मिले। जितना मंथन करे, उतना ही नवनीत मिले। जितना मनन करे, उतना ही संयम-पवित्र बने।

यह सूत्र भले ही आर्य शय्यंभवसूरि ने अपने पुत्र मुनि मनक के लिये रचा हो परन्तु इसकी उपयोगिता सार्वकालिक, सार्वजनिक और सार्वभौमिक है।

यह आगम जितना उपयोगी मनक मुनि के काल में था, उससे भी ज्यादा उपयोगी आज के इस भौतिक युग में है। यह बाल मुनियों के लिये तो अमृतमय है ही, विद्वान्, सामान्य, युवा, वृद्ध, हर साधु-साध्वी के लिये भी प्रशमरस और संयमरस से ओतप्रोत है।

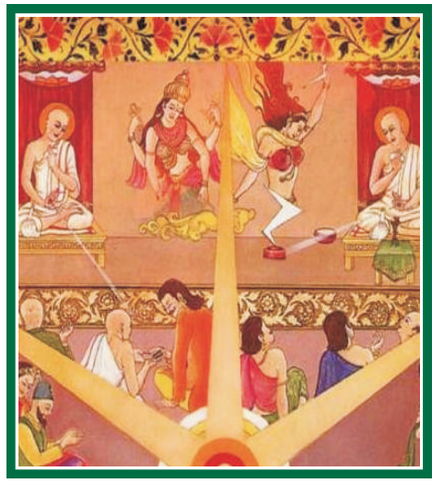

'धम्मो मंगलमुक्किट्ठम्' से इसका जो शुभारम्भ है, वह गोचरी के संदर्भ में विशेष प्रकाश डालता है। दूसरा श्रामण्यपूर्विका अध्ययन अपने आप में संतुलन का सूत्र है। यह सूत्र संयम से पतित, भ्रष्ट और विचलित होते साधु को समझाता है, धारण करता है और स्थिरता को बोध देता है। इसी दूसरे अध्ययन को प्रथम चूलिका के अठारह संयम सूत्रों के षष्टम सूत्र में पुनः दोहराया गया है।

शिष्य संयम के भ्रष्ट हो गया है।

उसकी मतिमारी गयी है जो गृहस्थ बनने का विचार कर रहा है।

गुरु महाराज अलग-अलग सूत्रों से उसे समझाते हुए कहते हैं-**वंतस्स य पडिआयणं।**

ओ वत्स! तूं गृहवासी बनने का विचार कर रहा है। साधु से संसारी, अणगार से आगारी, मुनि से विकारी बनने का दुस्साहस कर रहा है।

अरे! साधु! जरा सोच! चिन्तन के झरोखे से झांक और अपने भविष्य को देख! प्रभु-वाणी के तराजू पर अपने आपको तोल!

तेरे चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम हुआ, मनुष्य जीवन मिला, सत्संग का दुर्लभ अवसर सुलभ हुआ, तेरा दीक्षा का मनोरथ बना, परिजनों की तूंने अनुमति प्राप्त की, बढ़ते-चढ़ते भावों से संयम का पवित्र वेश धारण किया और महान् अमृत घट हाथ लगा।

अब तूं फिर से पापमय, विकारमय, दुर्गतिमय संसार में लौटना चाहता है। यह तो ठीक वमित पदार्थ का पुनर्पान करने जैसा घृणित कार्य है।

अरे मुनि! तुझे याद है साध्वी राजीमति और

रथनेमि का जीवन-वृत्तान्त? जब अरिष्टनेमि राजीमति का परित्याग कर अरण्यवासी बन गये, तब उनके लघुभ्राता रथनेमि राजीमति की चाह संजो बैठे। उन्हें यह पता नहीं था राजीमति कोई सामान्य स्त्री नहीं है। नश्वर शरीर में एक विराट्, पवित्र और चरम शरीरी आत्मा का निवास है।

मनाने, अपना बनाने के हजार यत्न करने के बाद भी राजीमती उसकी न हुई। इस कडी में राजीमती ने अपने संयमित, जागरूक और पावन आचरण से यह प्रतिबोध दिया कि राजीमती तुम्हारी किसी भी किंमत पर नहीं हो सकती। पर रथनेमि का काम कम न हुआ तब एक बार राजीमति ने मदनफल खाकर उल्टी की और रथनेमि को कहा-इसे चाटो!

रथनेमि झुंझला गया। राजी! तुम यह क्या कह रही हो? यह क्या बेहूदा बात कर रही हो कि इस उल्टी को चाट लो। संसार में भला किसी वमित पदार्थ का पुनर्पान किया है?

राजीमती ने अपना शुभाशय प्रकट करते हुए कहा तो फिर रथनेमि! जिस राजीमती को अरिष्टनेमि ने छोड दिया, उसे पाने का प्रयास क्यों! पलभर के उद्बोधन ने रथनेमि की आत्मा को जीवन का सर्वश्रेष्ठ पथ दे दिया। वह साधुता की साधना में ढल गया।

उनके संदर्भ में एक घटना प्रव्रजित होने के बाद की है। बरसात में भीगती हुई साध्वी राजीमती एक अंधेरी गुफा में पहुँची और अपने भीगे कपड़े सूखाने लगी। उसे पता नहीं था कि उसी गुफा में मुनि रथनेमि ध्यानस्थ है।

अचानक विद्युत् कड़की। उसके प्रकाश में ज्योंहि रथनेमि की दृष्टि राजीमती की देहिक सुन्दरता पर पड़ी कि रथनेमि का मन फिसला।

वह बोला- राजीमती! आओ, हम एक होकर अपने जीवन को सार्थक करें।

अनभिज्ञ राजीमती को शब्दावली से पूरा अनुमान हो गया कि हो न हो, यह रथनेमि की ही वासना भरी पुकार है।

वह धिक्कारती हुई बोली-हे अपयशकामी रथनेमि। तुझे धिक्कार है! तुझ पर थूत्कार है। त्यक्त संसार को पुनः भोगने की बजाय मरण का वरण ही श्रेयस्कर है।

अरे! तूंने अगंधन कुल के सर्प की वार्ता सुनी होगी। वह धधकती ज्वाला में कूदकर प्राणान्त करना पसंद करता है परन्तु वमित विष को वापस नहीं खींचता। तूं तो उस सर्प से भी निकृष्ट है।

जिस प्रकार लगाम खींचने से उच्छृंखल अश्व वश में आ जाता है, अंकुश से उन्मत हाथी निर्यंत्रित हो जाता है, वैसे ही राजीमती की फटकार सुनकर रथनेमि संयमित हो गये। अपने दुष्ट वचनों की आलोचना लेकर ऐसी उत्कृष्ट साधना की कि उसी भव में मुक्त हो गये।

तुझे याद है मेघकुमार का दृष्टान्त। एक ही रात की प्रतिकूलता से इतने अस्वस्थ एवं अस्त-व्यस्त हो गये कि परमात्मा महावीर के चरणों में गृहवासी बनने की प्रार्थना कर बैठे! परमात्मा महावीर का फरमान था कि मुनि मेघकुमार! तूं एक रात्रि के उपसर्ग से ही विचलित हो गया पर पूर्व भवों को देख। वहाँ के महाउपसर्गों को जीतकर ही तुमने संयम की दिव्य सम्पदा प्राप्त की है।

तुझे पता है न, कि चातक पक्षी जो गंगा का निर्मल जल भी नहीं पीता। वह स्वाति नक्षत्र के बरसात के जल के सिवाय प्यासा रहकर मर जाना पसंद करता है।

मुनि मेघ! ग्रहित-स्वीकृत व्रतों-महाव्रतों के पालन में उपस्थित विघ्न-बाधाओं से भागकर संसार के सुखों को पाने की बजाय प्रतिकूलता की महाग्नि में जलकर भस्म हो जाना कल्याणकारी है।

मुनिवर! तू सोच जरा। संभल जरा! यदि एक बार संयम के शिखर से पतित हो गये तो फिर पतित होते चले जाओगे। तदुपरान्त उसी प्रकार पश्चात्ताप करोगे जिस प्रकार समतल मार्ग को छोड़कर एक भारवाहक उतार चढाव भरे मार्ग का चयन करके होता है।

संसार एक बार छोड दिया तो अब हेय पदार्थों में भला ममत्व और हृदय का लगाव कैसा? क्या तूं इतना गया-बीता है जो स्वादिष्ट व्यंजन को छोड़कर अशुचि में अनुरक्त बनता है।

क्यों तूं अपने ही हाथों अपने सुखी जीवन में आग लगाना चाहता है?

क्यों तूं जान बूझकर अपने आपको खड्डे में गिरा रहा है?

क्यों तू अपने ही हाथों अपने पावों पर कुल्हाड़ी मारने का पागलपन कर रहा है?

फिर यह भी तो सोच कि संसार में जाने पर सुख मिलेगा ही या सुख ही मिलेगा, इसकी क्या गारण्टी है।

संयम जीवन की साधना का एक-एक पल स्वर्ग लोक के हजारों-लाखों सुखों से भी करोड़ों गुणा मूल्यवान् है। **'वंतस्स य पडियाअणं'** यानि वमित भोगों की चाहना, याचना और कामना में अंधत्व को प्राप्त करके क्यों अपनी आत्मा को भारीकर्मा बना रहा है? संसार के सारे सुख कांच की भांति चमकते तो बहुत हैं पर हाथ में लेते ही हाथों को जख्मी कर देते हैं। रथनेमि और मेघकुमार की तरह अपने अस्थिर मन की लगाम खींच और सही राह पर आ। मुझे तो बस इतना ही कहना है।

ब्रह्मसर गुरुदेव दर्शन यात्रा का आयोजन

17 जनवरी को पौष पूर्णिमा के अवसर पर कुशल दर्शन मित्र मण्डल की ओर से एक दिवसीय बाड़मेर से ब्रह्मसर गुरुदेव दर्शन यात्रा का आयोजन किया गया। महापूजन व महाआरती का आयोजन किया गया। विमलनाथ भगवान की आरती का लाभ आसूलाल लक्ष्मणदास लूणिया व दादा गुरूदेव की आरती का लाभ भगवानदास आदमल छाजेड परिवार एवं नाकोडा भैरव देव की आरती का लाभ राणमल कैलाशचंद बागचार ब्रह्मसर परिवार ने लिया। सुबह की नवकारसी का लाभ शंकरलाल रतनलाल कैलाशचंद बोथरा व शाम का कुशल युवा मण्डल जैसलमेर की ओर से लिया गया।

प्रेषक- कपिल मालू

जैन तीर्थ दर्शन
(राजस्थान एवं गुजरात)
फोर सीजन्स इण्डिया टूर्स

लार्ज कोच, मिनी कोच, टेम्पो ट्रेवल्स, इनोवा एवं स्विफ्ट डिजायर

- आरामदायी व सुविधाजनक ए.सी.बसें (18/35 सीट)।
- राजस्थान का पहला जैन दर्शन हेतु विशाल टूर नेटवर्क।
- बेहतर सेवायें देने हेतु अनुभवी चालक/परिचालक द्वारा राजस्थान/गुजरात जैन स्थल भ्रमण।
- आरामदायक सफर के साथ तीर्थ स्थानों के बारे में विस्तृत जानकारी।

406, वी-जय सिटी पोईन्ट, अहिंसा सर्किल, सुभाष मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-1 (राज.) इण्डिया

ब्रांच : उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर।

फोन : +91 141-5112605/06/07, फैक्स :+ 91 141-5112608, मो. 98289 14111
E-mail: info@fsit.in, accounts@fsit.in Web: www.fsit.in

पूज्यश्री के चरणों में मालू परिवार का शतशः वंदन

शा. मांगीलाल-विमला

मांगीलाल मालू
093747 13889,
081288 20000

जितेन्द्र मालू
093759 60465,
081288 30000

जितेन्द्र-सीमा,
मनीष-ज्योति, कपिल-मंजू,
पौत्र : रजत, प्रशांत
बेटा-पोता आसुलालजी गोपचन्दजी मालू,
चौहटन-बाड़मेर-सुरत

Firm
RAMDEV CORPORATION
H - 2550, R.K.P.M., Ring Road
SURAT (GUJ.)
Phone : (0261) 2322025, 2352025

तत्त्वावबोध 07

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

चतुर्भंगी का चमत्कार

(समरादित्य का पूर्व भव)

गतांक से...

43-क्रोध और पश्चात्ताप

1. मैंने क्रोध किया, पश्चात्ताप भी किया-चण्डकौशिक सर्प
2. मैंने क्रोध किया पर पश्चात्ताप नहीं किया-दुर्योधन
3. मैंने क्रोध नहीं किया पर पश्चात्ताप किया-चण्डरूद्र के शिष्य मुनि
4. मैंने क्रोध और पश्चात्ताप, दोनों नहीं किये-ब्राह्मी व सुन्दरी

44-माया और पश्चात्ताप

1. मैंने माया की पर पश्चात्ताप नहीं किया-मल्लिनाथ का पूर्व भव, लक्ष्मणा
2. मैंने माया की और पश्चात्ताप भी किया-महावीर प्रभु को बाल्यावस्था में उपसर्ग देने वाला देव
3. मैंने माया और पश्चात्ताप, दोनों नहीं किये- तीर्थंकर
4. मैंने माया की नहीं की पर पश्चात्ताप किया-मेघकुमार

45-लोभ और पश्चात्ताप

1. मैंने लोभ किया, पश्चात्ताप भी किया-कपिल केवली
2. मैंने लोभ किया, पश्चात्ताप नहीं किया-मम्मण सेठ
3. मैंने लोभ नहीं किया पर पश्चात्ताप किया-कुरगडु मुनि
4. मैंने लोभ और पश्चात्ताप, दोनों नहीं किये-तीर्थंकर, गणधर

46-हास्य और पश्चात्ताप

1. मैंने हास्य किया-पश्चात्ताप भी किया-गुणसेन
2. मैंने हास्य किया पर पश्चात्ताप नहीं किया-द्रौपदी
3. मैंने हास्य और पश्चात्ताप, दोनों नहीं किये-अरिहंत
4. मैंने हास्य नहीं किया पर पश्चात्ताप किया-चन्दनबाला

47-आहार दान में द्रव्य-भाव

1. द्रव्य आहार दान, भावयुक्तता- शालिभद्र (संगम ग्वाला)
2. द्रव्य आहार दान, पर भाव अभाव- नागश्री, कपिला दासी
3. द्रव्य आहार दान नहीं पर भावदान-जीरण सेठ
4. द्रव्य और भाव, दोनों दान नहीं- कालसौकरिक कसाई

48-आतापना और कर्म

1. मैंने आतापना ली पर कर्म नहीं खपाये-सुकुमालिका
2. मैंने आतापना लेकर कर्म खपाये -परमात्मा महावीर
3. मैंने आतापना नहीं लेकर भी कर्म खपाये-गुणसागर
4. मैंने न आतापना ली, न कर्म खपाये-ब्रह्मदत्त चक्री

49-उत्सूत्र प्ररुपणा-पश्चात्ताप

1. मैंने उत्सूत्र प्ररूपणा की और पश्चात्ताप भी किया-गोशालक
2. मैंने उत्सूत्र प्ररूपणा की पर पश्चात्ताप नहीं किया-जमाली
3. मैंने उत्सूत्र प्ररूपणा नहीं की पर पश्चात्ताप किया-मृगावती
4. मैंने उत्सूत्र प्ररूपणा व प्रायश्चित्त, दोनों नहीं किये-सुधर्मा स्वामी

50-आलोचना-माया

1. मैंने मायापूर्वक आलोचना की-लक्ष्मणा साध्वी
2. मैंने अमाया से आलोचना की-अतिमुक्तक
3. मैंने माया की पर आलोचना नहीं की-मल्लिनाथ का पूर्व भव
4. मैंने माया नहीं की और आलोचना भी नहीं की -तीर्थंकर, गणधर

With best compliments from ASHOK M. BHANSALI

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

अल्पसंख्यक मान्यता

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

जैनों को अल्पसंख्यक मान्यता : स्वागत योग्य घोषणा

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जैन समाज को धर्म के आधार पर भारत सरकार ने अल्पसंख्यक की मान्यता प्रदान की है।

प्रथम क्षण में जब हम सुनते हैं तो एक अजीब सा भाव पैदा होता है। क्योंकि जैन एक धर्म है... एक विचार धारा है... जीवन जीने की पद्धति है! उसका समाज के साथ कोई गठबंधन नहीं है। तीर्थंकर परमात्मा की देशना के आधार पर अपने जीवन का निर्माण कर कोई भी व्यक्ति जैन हो सकता है।

परन्तु वर्तमान का परिवेश बदला है। जैन एक समाज के रूप में प्रतिष्ठित है। हजारों लोग ऐसे होंगे जो जैन धर्म का मात्र आंशिक ही पालन करते हैं, मूल भूत अल्पतम सिद्धांतों का पालन भी उनके जीवन में प्रकट नहीं है, फिर भी वे जैन हैं। क्योंकि उन्होंने पारम्परिक रूप से जैन धर्म का पालन करने वाले कुल में जन्म लिया है।

कुल मिलाकर वर्तमान में जैन धर्म ने जाति का रूप ले लिया है।

पिछले लम्बे समय से यह चर्चास्पद विषय रहा कि जैन धर्म को अल्पसंख्यक की मान्यता स्वीकार की जानी चाहिये या नहीं! भारत के संविधान में जैन धर्म को बौद्ध, सिक्ख, ईसाई, पारसी, मुस्लिम आदि के साथ अल्पसंख्यक माना है। भारत का संविधान अल्पसंख्यकों को विशेष प्रकार की सुरक्षा देता है।

इस विषय में जैन आचार्यों, पंथों, संप्रदायों, समाज के आगेवानों में बहुत चर्चा विचारणा हुई। पिछले 15 वर्षों से यह विषय चर्चा में है। समाचार पत्रों में लोगों ने अपने अपने मंतव्य प्रकाशित किये। कई

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

EXTRAORDINARY
PUBLISHED BY AUTHORITY
NEW DELHI, MONDAY, JANUARY 27, 2014/MAGHA 7, 1935

MINISTRY OF MINORITY AFFAIRS
NOTIFICATION
New Delhi, the 27th January, 2014

S.O. 267(E).—In exercise of the powers conferred by clause (c) of Section 2 of the National Commission for Minorities Act, 1992 (19 of 1992), the Central Government hereby notifies the Jain community as a minority community in addition to the five communities already notified as minority communities i.e. Muslims, Christians, Sikhs, Buddhists and Zoroastrians (Parsis) vide Ministry of Welfare Notification No. S.O. 816(E), dated 23.10.1993 for the purposes of the said Act.

(F. No. 1-1/2009-NCM)
LALIT K. PANWAR, Secy.

लोग समर्थन में थे तो कई विरोध में!

जो विरोध में थे, उनके तर्क थे कि जैन और हिन्दु आज तक साथ साथ रहते आये हैं। उनके सारे रीति रिवाज एक जैसे है। अल्पसंख्यक के पाले में चले जाने के बाद हिन्दुओं के साथ समरसता में अल्पता आयेगी। और सीधे सीधे मुस्लिमों के साथ खडे होने का संकट खडा होगा। जैन श्वेताम्बर समाज के मूर्तिपूजक समाज का अधिकतम तबक्का इसी तर्क के साथ खडा था। और सभाओं में, प्रवचनों में, अखबारों में अपने मत की मजबूत पुष्टि करता था।

तेरापंथ समाज व स्थानकवासी समाज का भी मत

प्राय: ऐसा ही था। दिगम्बर समाज इस विषय में पूर्णरूप से एकमत था कि अल्पसंख्यक की मान्यता जैन समाज को मिलनी ही चाहिये।

मैंने कई आचार्यों को इस विषय में अपना मत स्पष्ट करते हुए लिखा था कि अल्पसंख्यक मान्यता का विरोध व समर्थन इतनी जल्दबाजी में नहीं होना चाहिये। हमें चाहिये कि समाज के आगेवानों, विशेषज्ञों का एक सम्मेलन आहूत करें। इस विषय में बंद कक्ष में विशद चर्चा हो। और चर्चा के निष्कर्ष को प्रकट किया जाये। हमें इस विषय पर अवश्य विचार करना चाहिये कि अल्पसंख्यक होने के लाभ क्या है, हानि क्या है! इसी प्रकार अल्पसंख्यक नहीं होने के लाभ व हानि क्या है! जब तक मौलिक मुद्दों पर विचार मंथन नहीं होगा, तब तक हवा में वार्ता करने का कोई अर्थ नहीं होता। मात्र समाचार पत्र में अपना नाम प्रकाशित करने के लिये वक्तव्य नहीं दिये जाने चाहिये।

हमने इस विषय में

अल्पसंख्यक होने के लाभ क्या है,
एक विशेषज्ञ ने इसकी सूची इस प्रकार तैयार की है-

1. जैन धर्म की सुरक्षा होगी।
2. स्कूलों में जैन धर्म की शिक्षा दी जा सकेगी।
3. व्यवसाय व शिक्षा तकनीकी हेतु कम ब्याज पर लोन उपलब्ध होगी।
4. जैन कॉलेजों में जैन विद्यार्थियों के लिये 50 प्रतिशत सीटें आरक्षित होगी।
5. जैन धर्म के धार्मिक स्थल, संस्थाऐं, मंदिर, तीर्थ, ट्रस्ट आदि का सरकारी करण या अधिग्रहण नहीं किया जा सकेगा। अपितु धार्मिक स्थलों का समुचित विकास एवं सुरक्षा के व्यापक प्रबंध शासन द्वारा किये जायेंगे।
6. उपासना स्थल अधिनियम 1991(42 आक.18.9.91) के तहत किसी धार्मिक उपासना स्थल बनाये रखने हेतु स्पष्ट निर्देश जिसका उल्लंघन धारा 6 के अधीन दंडनीय अपराध है।
7. सन् 1958 के अधिनियम धारा 19 व 20 के तहत पुराने स्थलों एवं पुरातन धरोहर को सुरक्षित रखना।
8. समुदाय द्वारा संचालित ट्रस्टों की संपत्ति को किराया नियंत्रण अधिनियम से मुक्त रखा जायेगा।
9. गरीब प्रतिभावान विद्यार्थियों का शुल्क पूर्णत: माफ कर दिया जायेगा।
10. जैन मंदिर, तीर्थ, शैक्षणिक संस्थाओं के प्रबंध की जिम्मेदारी समुदाय के हाथों में दी जायेगी।
11. शैक्षणिक आदि संस्थाओं के स्थापन व संचालन में सरकारी हस्तक्षेप कम हो जायेगा।
12. जैन समाज को स्कूल, कॉलेज, छात्रावास, शोध संस्थान, प्रशिक्षण संस्थान आदि खोलने हेतु सभी सुविधाऐं व रियायत दर पर भूमि उपलब्ध करवाई जायेगी।
13. विद्यार्थियों को प्रशासनिक सेवाओं व व्यावसायिक पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण हेतु अनुदान मिल सकेगा।
14. जैनों द्वारा जीव दया, शिक्षा, चिकित्सा, सेवा आदि के लिये दिया गया दान करमुक्त होगा।
15. जैन धर्मावलम्बी को किसी अन्य व्यक्ति द्वारा प्रताडित किये जाने पर सरकार द्वारा सुरक्षा मिलेगी।
16. धार्मिक स्थलों के विकास हेतु सरकार द्वारा व्यापक प्रबंध किये जायेंगे।
17. अल्पसंख्यक समुदाय के लिये कराये गये आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक स्थिति के सर्वेक्षण के आधार पर रोजगार मूल सुविधा का लाभ मिलेगा। इत्यादि ।

काफी मंथन किया था। संघ के आगेवान हमारे प्रिय भाईजी श्री हरखचंदजी नाहटा से इस संबंध में बहुत चर्चा हुई थी। उनके साथ लाभ हानि, वर्तमान भविष्य आदि के संबंध में गहरा चिंतन करके हमारा यह मत निर्धारित हुआ था कि जैन समाज को माइनोरिटी मिलना ही चाहिये। बदलती समाज की परिस्थितियों में यह सुरक्षा की एक बहुत बडी व्यवस्था है।

जब हमारा चातुर्मास उज्जैन में था, तब तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकरदयालजी शर्मा का वहाँ आगमन हुआ था। हमारी उनसे 20 मिनट की मुलाकात तय हुई थी। तब उनके साथ वार्तालाप में हमने यह बात कही थी। उन्हें दिये गये विस्तृत दो पृष्ठीय ज्ञापन में इस बात का प्रमुखता से उल्लेख करके अल्पसंख्यक मान्यता प्रदान करने के लिये निवेदन किया था।

कितने ही समाचार पत्रों को दिये गये संवाददाता सम्मेलन में भी हमने यह बात प्रमुखता से उठाई थी। कई पत्रकारों के तीखे सवालों के सीधे जवाब देकर अल्पसंख्यक मान्यता के पक्ष में अपने कारण बताये थे।

मुझे याद है हमारा सन् 1997 का चातुर्मास मांडवला जहाज मंदिर में था। तब पूज्यपाद विद्वद्वर्य श्री जंबूविजयजी म.सा. का पत्र लेकर अहमदाबाद से एक आगेवान श्रावक हमारे पास आये थे। पूज्यश्री अल्पसंख्यक मान्यता के पक्षधर नहीं थे। उन्होंने मुझे पत्र में लिखा था कि आपके खरतरगच्छ के एक आगेवान श्रावक जिनका परिचय दिल्ली के सत्ता केन्द्रों में है, वे श्री हरखचंदजी नाहटा अल्पसंख्यक मान्यता के लिये प्रयत्न कर रहे हैं। यह समाज के हित में नहीं हैं। अल्पसंख्यक की मान्यता मिलने से हम हिन्दुओं से अलग हो जायेंगे। श्री नाहटाजी आपके श्रावक हैं, आपके निकट हैं, इस कारण आप उन्हें समझाये।

जो श्रावक पत्र लेकर आये थे, मैं नाम भूल रहा हूँ, उन्होंने अपने मत के समर्थन में काफी तर्क दिये थे। तब हमने उन्हें बहुत अच्छी तरह समझाया कि अल्पसंख्यक होने में कितने लाभ हैं! समाज को, समाज की संपत्ति को, मंदिरों को कितनी सुरक्षा मिलेगी! शैक्षणिक गतिविधियों में कितनी सुविधाऐं मिलेगी!

इतिहास में झांके तो पायेंगे कि सन् 1873 में जब पहली जनगणना हुई थी, तब से अल्पसंख्यक का विषय चर्चा में आता रहा है। ब्रिटिश शासन में भी जैनों को अलग धार्मिक समुदाय माना जाता था।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इन्डिया में लिखा है कि जैन परम्परा हिन्दुओं के साथ दूध में शक्कर की भांति एक हो गई है। पर यह हरगिज नहीं भूलना चाहिये कि जैन एक अलग धार्मिक समुदाय है। यूनाइटेड नेशन्स ने भी जैनों को अल्पसंख्यक माना है। समस्त वर्ल्ड रिलिजियस इनसाइक्लोपिडिया तथा ब्रिटानिका इनसाइक्लोपिडिया में भी जैनों को हिन्दुत्व से सर्वथा अलग स्वतंत्र धार्मिक समुदाय गिना है।

सन् 1927 में मद्रास उच्च न्यायालय ने, 1951 में जस्टिस चागला व जस्टिस गजेन्द्र गडकर की बैंच ने तथा 1971 में बोम्बे हाइकोर्ट ने जैनों को स्वतंत्र धार्मिक समुदाय स्वीकार किया है।

भारत सरकार ने गजट में प्रकाशित करके जैनों को अल्पसंख्यक समुदाय में सम्मिलित करने की घोषणा कर दी है। इसे लेकर अभी भी समाज में दो मत चलते हैं।

सबसे पहली बात तो यह समझ लेनी चाहिये कि अल्पसंख्यक और पिछडा वर्ग दो अलग अलग बातें हैं। अल्पसंख्यक हो जाने से हम पिछडों की गिनती में नहीं आयेंगे।

भारत सरकार की घोषणा का स्वागत किया जाना चाहिये और जैन धर्म व संस्कृति की सुरक्षा के लिये जागरूक रहते हुए इन सुविधाओं का पूरा उपयोग किया जाना चाहिये।

श्री बाडमेर कल्याणपुरा नगरे

जीर्णोद्धार कारित प्राचीन श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर के

भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को

भावभरा आत्मीय आमंत्रण

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा

पावन सानिध्य

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.

पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि

महोत्सव प्रारंभ

शनिवार ता. 1 मार्च 2014

सकल श्री संघ से इस पावन अवसर पर पधारने का हार्दिक अनुरोध है।

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक कल्याणपुरा पार्श्वनाथ मंदिर ट्रस्ट एवं प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

कल्याणपुरा महावीर चौक

बाडमेर- 344001 राज.

कुशल वाटिका में प्रथम वर्षगांठ पर ध्वजारोहण

जैन समाज के आगेवान

साधक आदरणीय

भाईजी श्री हरखचंदजी नाहटा

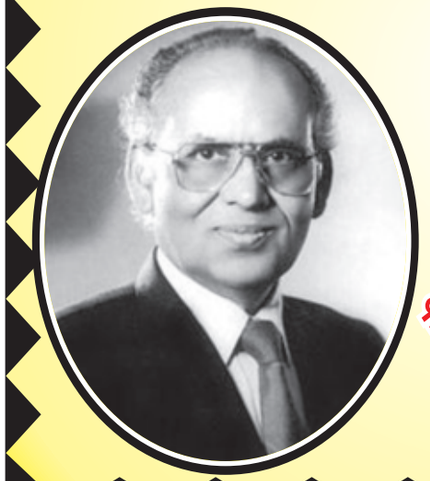

की15वीं पुण्यतिथि

(21 फरवरी 2014) पर

हार्दिक भावभीनी श्रद्धांजली

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मंदिर

मांडवला- 343042 जालोर (राज.)

हार्दिक श्रद्धांजली

श्री भंवरलालजी तातेड

नंदुरबार निवासी श्री भंवरलालजी तातेड का ता. 21 जनवरी को स्वर्गवास हो गया। उपधान तप की मंगलमय आराधना कर चुके श्री तातेडजी दादा गुरुदेव के परम भक्त धर्मनिष्ठ सुश्रावक थे। नंदुरबार से बलसाणा पैदल संघ का आयोजन आपने किया था। मासक्षमण व सिद्धि तप जैसी महान् तपस्या आपने अपने जीवन में करके कर्म निर्जरा की थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।

प्रेषक- कैलाश बी. संकलेचा

श्री हेमचंदजी गोलेच्छा

फलोदी निवासी श्री हेमचंदजी गोलेच्छा का स्वर्गवास हो गया। वे खरतरगच्छ संघ के आगेवान सुश्रावक थे। उनके स्वर्गवास से गच्छ में बहुत बडी क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।

श्रीमती हउआदेवी डोसी

चौहटन निवासी पूर्व विधायक श्री भगवानदासजी डोसी की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती हउआदेवी डोसी का ता. 28 जनवरी को स्वर्गवास हो गया। जहाज मंदिर ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान कार्याध्यक्ष श्री द्वारकादासजी डोसी की आप माताजी हैं। आप एक धर्मनिष्ठ श्राविका थी। नित्य सामायिक, देवदर्शन, पूजा आदि धर्म आराधना करती थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।

कुशल वाटिका में प्रथम वर्षगांठ पर ध्वजारोहण

कुशल वाटिका में प्रथम वर्षगांठ पर ध्वजारोहण

कुशल वाटिका में प्रथम वर्षगांठ पर ध्वजारोहण

पंचांग

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

मार्च महिने का पंचांग

Panchang of February Month

March 2014

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
						1 फाल्गुन वदि 30
2 फाल्गुन सुदि 1	3 फाल्गुन सुदि 2/3	4 फाल्गुन सुदि 4	5 फाल्गुन सुदि 5	6 फाल्गुन सुदि 6	7 फाल्गुन सुदि 7	8 फाल्गुन सुदि 8
9 फाल्गुन सुदि 8	10 फाल्गुन सुदि 9	11 फाल्गुन सुदि 10	12 फाल्गुन सुदि 11	13 फाल्गुन सुदि 12	14 फाल्गुन सुदि 13	15 फाल्गुन सुदि 14
16 फाल्गुन सुदि 15	17 चैत्र वदि 1	18 चैत्र वदि 2	19 चैत्र वदि 3	20 चैत्र वदि 4	21 चैत्र वदि 5	22 चैत्र वदि 6
23 चैत्र वदि 7	24 चैत्र वदि 8	25 चैत्र वदि 9	26 चैत्र वदि 10	27 चैत्र वदि 11	28 चैत्र वदि 12/13	29 चैत्र वदि 14
30 चैत्र वदि 30	31 चैत्र सुदि 1					

श्री शंखेश्वर महातीर्थ का पैदल संघ एक नजर में

मार्च मास

क्षय–वृद्धि

फाल्गुन सुदि 3 का क्षय

फाल्गुन सुदि 8 की वृद्धि

चैत्र वदि 13 का क्षय

08.03.14- रोहिणी तपाराधना

15.03.14- चौमासी प्रतिक्रमण

29.03.14- पाक्षिक प्रतिक्रमण

श्री वासुपूज्य स्वामी दीक्षा कल्याणक	फाल्गुन वदि अमावस	श्री मुनिसुव्रत स्वामी दीक्षा कल्याण	फाल्गुन सुदि 12
दादा श्री जिनकुशलसूरि स्वर्गवास दिवस	फाल्गुन वदि अमावस-1389	श्री जिनवर्धनसूरि स्वर्गवास दिवस	फाल्गुन सुदि 12-1486
देराउर, मालपुरा ब्रह्मसर में मेला	फाल्गुन वदि अमावस	शत्रुंजय तीर्थ छह गाऊ की यात्रा,	फाल्गुन फेरी, फाल्गुन सुदि 13
आ.श्री जिनउदयसागरसूरि जन्म दिवस	फाल्गुन वदि अमावस-1960	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी जन्म दिवस	फाल्गुन सुदि 14
श्री अरनाथ च्यवन कल्याणक	फाल्गुन सुदि 2	चातुर्मासिक प्रतिक्रमण	फाल्गुन सुदि 14
वीस विहरमान दीक्षा कल्याणक	फाल्गुन सुदि 3	श्री जिनेश्वरसूरि द्वितीय दीक्षा दिवस	चैत्र वदि 2-1258
श्री मल्लिनाथ च्यवन कल्याणक	फाल्गुन सुदि 4	श्री पार्श्वनाथ च्यवन कल्याणक	चैत्र वदि 4
श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरि स्वर्गवास	फाल्गुन सुदि 5-2017	श्री पार्श्वनाथ केवलज्ञान कल्याणक	चैत्र वदि 4
श्री हेमेन्द्रसागरजी गणाधीश पद	फाल्गुन सुदि 5-2018	श्री चन्द्रप्रभ च्यवन कल्याणक	चैत्र वदि 5
श्री जिनसागरसूरि आचार्य पद	फाल्गुन सुदि 7-1674	श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरि आचार्य पद	चैत्र वदि 7-2017
श्री संभवनाथ च्यवन कल्याणक	फाल्गुन सुदि 8	श्री आदिनाथ जन्म-दीक्षा कल्याणक	चैत्र वदि 8
श्री जिनकुशलसूरि दीक्षा दिवस	फाल्गुन सुदि 8-1346	वर्षीतप प्रारम्भ	चैत्र वदि 8
मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि दीक्षा दिवस	फाल्गुन सुदि 9-1203	चतुर्थ दादाश्री जिनचन्द्रसूरिजी जन्म	चैत्र वदि 12-1595
श्री मल्लिनाथ मोक्ष कल्याणक	फाल्गुन सुदि 12	नूतन वर्ष प्रारंभ	चैत्र सुदि 1

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने शंखेश्वर से जहाज मंदिर की ओर विहार किया है। वे ता. 13 फरवरी को जहाज मंदिर पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में जहाज मंदिर की 15वीं वर्षगांठ का आयोजन होगा। तीन चार दिनों की स्थिरता के पश्चात् बाडमेर की ओर विहार करेंगे। जहाँ पूज्यश्री की निश्रा में ता. 5 मार्च 2014 को कल्याणपुरा स्थित श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री आगोलाई पधारेंगे, जहाँ पूज्यश्री की निश्रा में ता. 12 मार्च को परमात्मा का गर्भगृह में प्रवेश समारोह संपन्न होगा एवं प्रतिष्ठा की जाजम के चढावे होंगे।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री जहाज मंदिर पधारेंगे।

संपर्क सूत्र-

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक, **जहाज मंदिर,**

पो. मांडवला- 343042 जिला-जालोर (राज.) फोन- 96496 40451 (मुकेश- 97843 26130)

श्री शंखेश्वर महातीर्थ का पैदल संघ संपन्न

21 जनवरी से प्रारंभ हुआ संघ
4 फरवरी को शंखेश्वर तीर्थ पहुँचा

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री प्रियदिव्यांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री प्रियशुभांजनाश्रीजी म. आदि की पावन सानिध्यता में श्री चितलवाना से श्री शंखेश्वर महातीर्थ के लिये छह री पालित संघ ता. 21 जनवरी को रवाना हुआ। शा. दलीचंदजी मिश्रीमलजी मावाजी मरडिया परिवार द्वारा आयोजित यह संघ सत्यपुर, भोरोल, भाभर, राधनपुर आदि तीर्थों की यात्रा करता हुआ ता. 4 फरवरी को शंखेश्वर महातीर्थ पहुँचा।

संघ प्रयाण से पूर्व ता. 17 जनवरी को पूज्य उपाध्याय श्री एवं पू. माताजी म. पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि साधु साध्वी मंडल का नगर प्रवेश संपन्न हुआ। ता. 18 से संघपति परिवार द्वारा त्रिदिवसीय जीवित महोत्सव का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत ता. 18 को पंचकल्याणक पूजा पढाई गई। ता. 19 को दादा गुरुदेव की पूजा के साथ साथ मातृ पितृ वंदना का अनूठा भावनात्मक कार्यक्रम रखा गया। जिसे आबूरोड की भावना आचार्य ने संचालित किया।

ता. 19 को पूजा के साथ रात्रि में सुप्रसिद्ध लोक संगीतकार श्री प्रकाश माली द्वारा कुल देवी श्री सच्चिया माता का रात्रि जागरण रखा गया। ता. 20 को शान्तिस्नात्र महापूजन का आयोजन किया गया। रात्रि में भक्ति भावना का आयोजन हुआ।

ता. 21 जनवरी को प्रात: शुभ मुहूर्त्त में विधि विधान के साथ चतुर्विध संघ का प्रयाण हुआ। हाडेचा निवासी श्री मावजी टोमाजी घोडा परिवार द्वारा विजय तिलक का विधान किया गया।

संघ में 800 से अधिक आराधकों ने आराधना का आनंद लिया। इस संघ की यह बहुत बडी विशेषता रही कि इस संघ में तपस्या बहुत हुई। प्रतिदिन 100 से ऊपर आयंबिल तप की आराधना हुई। माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन सामूहिक आयंबिल आराधना में 250 आयंबिल हुए।

पूज्यश्री की प्रेरणा प्राप्त कर 100 से अधिक आराधकों ने ता. 2 फरवरी से 4 फरवरी तक अट्ठम तेला की तपस्या करके दादा के दर्शन किये।

ता. 31 जनवरी, 1 फरवरी को संघपति परिवार की ओर से समस्त आराधकों का दुग्ध से पाद-प्रक्षालन, तिलक, माला, श्रीफल, रजतमय स्मृति चिन्ह एवं अक्षतों से वर्धापना आदि द्वारा अभिनंदन किया गया।

ता. 2 फरवरी को कार्यकर्त्ताओं का बहुमान किया गया। ता. 4 फरवरी को शाम को आराधकों की ओर से संघपति परिवार का बहुमान किया गया। तिलक द्वारा बहुमान का लाभ श्री सूरजमलजी शिवदानमलजी बरमेशा परिवार नगर वालों ने, माला का लाभ श्री किशनलालजी नेमीचंदजी मुथा, चितलवाना, श्रीफल से लाभ श्री चंपालालजी खीमराजजी भावड सिणधरी, साफा चुन्दडी से लाभ श्री प्रतापमलजी मगनीरामजी बालड सिणधरी, रजतमय स्मृति चिन्ह से लाभ श्री चंपालालजी मगनीरामजी बालड सिणधरी वालों ने लिया।

इस अवसर पर श्री चितलवाना जैन संघ, श्री सांचोरी जैन ओसवाल समाज पट्टी, श्री जैन नवयुवक मंडल सांचोरी पट्टी, श्री सिणधरी जैन संघ, नगर जैन संघ, शेरगढ जैन संघ, थोभ जैन संघ, श्री नाकोडा जैन संघ, श्री आदेश्वर मित्र मंडल आदि विविध संघों व संस्थाओं की ओर से संघपति परिवार का

- संघवण श्रीमती पारूदेवी दलीचंदजी मरडिया को संघपति माला का लाभ शा. गुणेशमलजी मावाजी मरडिया, वंसराजजी मावाजी मरडिया, पुखराजजी हुकमीचंदजी मरडिया, पारसमलजी हुकमीचंदजी मरडिया परिवार ने लिया ।
- श्री मोहनलालजी एवं श्रीमती मफीदेवी- श्रीमती फूलीदेवी राणमलजी मेहता, सिणधरी
- श्री लालचंदजी एवं श्रीमती पंखीदेवी- श्री मलराजजी वरधाजी घोडा, सांचोर
- श्री शांतिलालजी एवं श्रीमती भंवरीदेवी- श्री नेमीचंदजी अचलाजी मुता, चितलवाना
- श्री घेवरचंदजी एवं श्रीमती सवितादेवी- श्री धर्माजी टोमाजी घोडा, हाडेचा
- श्री राजमलजी, श्रीमती सवितादेवी एवं रिषभकुमार- श्री धींगडमलजी कांतिलालजी मेहता, सिणधरी

माला की बोलियों का कीर्तिमान हुआ। जीवदया में भी अच्छी टीप हुई।

बहुमान किया गया।

ता. 5 फरवरी को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा के दरबार में तीर्थमाला का आयोजन किया गया। पूज्यश्री ने अपनी विशिष्ट शैली में तीर्थ माला का विधि विधान करवाया। शुभ मुहूर्त्त में माला विधान संपन्न हुआ। इस अवसर पर सांचोरी पट्टी, मालाणी पट्टी का पूरा समाज उपस्थित था।

दश वर्षों की मरडिया परिवार की भावना आज साकार हुई थी। श्री राजमलजी ने पिछले दश वर्षों से मिष्टान्न का सर्वथा त्याग कर रखा था। इस वर्ष पूज्यश्री का चातुर्मास पालीताना में था। तब उनकी लगातार विनंती रही कि इस वर्ष संघ का आयोजन करना है। आयोजन आपकी निश्रा में ही होना है। आपकी निश्रा प्राप्त करने के लिये 10 वर्षों से प्रतीक्षा है।

पूज्यश्री ने उनकी विनंती स्वीकार कर पालीताना में बोथरा परिवार की दीक्षा महोत्सव पर 21 जनवरी का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया था।

कुशल वाटिका मंदिर की प्रथम वर्षगांठ सम्पन्न

राष्ट्रीय राजमार्ग-15 पर स्थित प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म. सा की स्मृति में बनी कुशल वाटिका प्रांगण में श्री मुनिसुव्रत स्वामी, नवग्रह मन्दिर, दादावाड़ी, गुरू व देव-देवी मन्दिरों का प्रथम ध्वजारोहण मुनिराज मणिरत्नसागरजी म.सा. व कुशल वाटिका प्रेरणादात्री प.पू. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि की पावन निश्रा में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम श्री मुनिसुव्रत स्वामी मन्दिर में सतरह भेदी पूजा का आयोजन कर सभी 9 मन्दिरों के लाभार्थी परिवारों द्वारा परिवारजन सहित शुभ मुर्हूत 9.45 बजे गाजे-बाजे व पुण्याहं-पुण्याहं, प्रियन्तां-प्रियन्तां के जय घोष के साथ ध्वाजारोहण किया गया।

ध्वजारोहण के कार्यक्रम के बाद कांतिमणि प्रवचन पाण्डाल में बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत स्वामी महापूजन का अयोजन अहमदाबाद के विधिकारक दिलीप भाई व संगीतकार द्वारा 108 आराधकों के साथ विधि-विधान सहित सभी को यंत्र भेंट कर करवाया गया। मुख्य यंत्र के लाभार्थी सम्पतराज प्रकाशचन्द लूणिया, बाड़मेर व यंत्र भेंट करने का रतनलाल चिंतामणदास पारख परिवार, चौहटन ने लाभ लिया। इस कार्यक्रम में वार्षिक पूजाओं के चढ़ावे बोले गये। जिसमें श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्वामी वात्सल्य का आयोजन शा. मांगीलालजी आसूलालजी मालू परिवार, चौहटन वालों ने किया। कार्यक्रम में अहमदाबाद, सूरत, पाली, जोधापुर, बालोतरा, सांचोर, धोरीमन्ना, चौहटन व आस-पास के सैकड़ों लोगों सहित ट्रस्ट अध्यक्ष भंवरलाल छाजेड, वरिष्ठ उपाध्यक्ष संघवी तेजराज गुलेच्छा, हरि विहार ट्रस्ट के महामंत्री बाबूलाल लूणिया, ट्रस्टी जगदीश भंसाली, सम्पतराज बोथरा, सुरेश लूणिया, बाबूलाल संखलेचा, रतनलाल हालावाला, सम्पतराज धारीवाल, बाबूलाल मालू, उदयराज गांधी, शंकरलाल धारीवाल, रतनलाल संखलेचा, बाबूलाल सेठिया, चम्पालाल छाजेड़, शांतिलाल छाजेड़, बंशीधर बोथरा, सज्जनराज मेहता, कैलाश कोटड़िया, वीरचन्द वडेरा, राणमल संखलेचा, पारसमल गोठी, सम्पतराज अवतारी, हस्तीमल बोथरा, धनराज भंसाली, रायचन्द दायमा, भैरचन्द लूणिया, रणजीतमल मालू, विनोदकुमार हालावाला, पुखराज लूणिया, गौतम मालू, सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। धर्मसभा में गुरूभंगवतों के प्रवचन व कार्यक्रम के लाभार्थी परिवारों का ट्रस्ट मण्डल द्वारा बहुमान किया गया।

प्रेषक- केवलचन्द छाजेड

कुशल वाटिका में हुआ 152 यूनिट रक्तदान

बाड़मेर कुशल वाटिका प्रांगण में जिनमन्दिरों की प्रथम वर्षगांठ के उपलक्ष में मानव सेवा संस्थान, जोधपुर व कुशल वाटिका युवा परिषद्, बाड़मेर के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में महिलाओं में रक्तदान का भारी उत्साह देखने को मिला। 103 यूनिट महिलाओं ने एवं 49 यूनिट पुरुषों ने रक्तदान किया। इस रक्तदान शिविर में मानव सेवा संस्थान के अध्यक्ष रमेश छाजेड़ कुशल वाटिका युवा परिषद् के अध्यक्ष केवलचन्द छाजेड़ सहित कई कार्यकत्ताओं ने सहयोग किया।

प्रेषक- सुनिल छाजेड

महासमुन्द से शिखरजी संघ संपन्न

पू. श्रमण संघ सलाहकार रतनमुनिजी म. गच्छ समन्वयक पद से अलंकृत

पू. मनोज्ञसागरजी म. शासन सूर्य एवं पदयात्रा रत्न शिरोमणि पद से विभूषितं

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म. के सुशिष्य पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. एवं श्रमण संघ के प्रवर्तक संत प्रवर श्री रतनमुनिजी म. एवं पूजनीया महासती श्री कमलेशकंवरजी म. आदि की पावन निश्रा में महासमुन्द से 13 दिसम्बर 2013 को श्री सम्मेतशिखरजी महातीर्थ के लिये प्रस्थित छह री पालित पद यात्रा संघ विविध तीर्थों की यात्रा करता हुआ अत्यन्त आनंद मंगल व हर्षोल्लास के साथ निर्विघ्न शिखरजी की पावन धरा पर 49वें दिन ता. 30 जनवरी 2014 को पहुँच गया। जहाँ संघ का भव्य स्वागत किया गया।

पिछले तीन चार दिनों के लिये पूजनीया मरूधर ज्योति श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्याऐं भी पद यात्रा संघ में सम्मिलित हुई। तथा शिखरजी प्रवेश के अवसर पर रिजुबालिका तीर्थ से विहार कर पूजनीया मणिप्रभाश्रीजी म.सा. शिखरजी पधारे।

इस पद यात्रा संघ के अनूठे आयोजन ने जैन एकता की दिव्य मिशाल कायम की। यह पहला आयोजन था जिसमें मंदिरमार्गी और स्थानकवासी संत सामूहिक रूप से सम्मिलित रहे तथा भक्ति भावना, प्रवचन, आराधना, तीर्थयात्रा आदि का अनूठा उदाहरण सकल जैन समाज के सामने प्रस्तुत किया।

ता. 30 को समस्त पदयात्रियों का संघपतियों की ओर से पद प्रक्षालन, तिलक, माला, श्रीफल, स्मृति चिन्ह आदि द्वारा भावभीना बहुमान किया गया।

ता. 31 जनवरी को समस्त आराधकों के साथ मुनि मंडल ने तीर्थयात्रा, सेवा, पूजा, दर्शन आदि आनंद लिया। रात्रि में नीचे महाचमत्कारी भोमिया बाबा की भक्ति भावना का अनूठा रंग जमा।

ता. 1 फरवरी 2014 को तीर्थ माला महोत्सव में संघपतियों को विधि विधान के साथ माला धारण करवाई गई। इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. ने महासमुन्द जैन संघ को इस ऐतिहासिक संघ के आयोजन के लिये बधाई दी। तथा पूज्य रतनमुनिजी म.सा. एवं महासती श्री कमलेशश्रीजी म.सा. के प्रति उनकी सानिध्यता को संघ समन्वय की दृष्टि से मील का पत्थर बताते हुए संघ में पधारने पर कृतज्ञता ज्ञापित की।

इस अवसर पर लोकमान्य श्री रतनमुनिजी म. ने कहा– यह पदयात्रा संघ मुनि श्री मनोज्ञसागरजी की दृढ इच्छा शक्ति एवं सकल्प का अनुपम उदाहरण है। इस यात्रा में शामिल होकर हम सभी मुनि जन अपने आप को धन्य कृत कृत्य अनुभव करते हैं। जो हमें 20 तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि के पावन दर्शन स्पर्शन का लाभ मिला। इस महान् आयोजन के लिये जैन श्री संघ बधाई का पात्र है।

सुप्रसिद्ध साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. ने कहा– इतनी कडाके की सर्दी में यह दीर्घ पद यात्रा निश्चित रूप से अतुलनीय एवं अनुमोदनीय है। यह पद यात्रा इतिहास के पन्नों में अपना नाम अंकित करेगी।

विदुषी साध्वी पू. कमलेशश्रीजी म.सा. ने संघ समन्वय की उदार भावना को नमन करते हुए पू. मनोज्ञसागरजी म. एवं जैन श्री संघ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए स्वयं को इस यात्रा में शामिल होने के लिये भाग्यशाली माना।

इस शुभ अवसर पर पू. रतनमुनिजी म.सा. की आज्ञा से साध्वी कमलेशकंवरजी म. ने पू. मनोज्ञसागरजी म.सा. को **शासन सूर्य** पद से अलंकृत किया।

जैन श्री संघ महासमुन्द ने दो अलग अलग परम्पराओं के बीच समन्वय के महान् कार्य के लिये पूज्य श्री रतनमुनिजी म.सा. को **गच्छ समन्वयक** एवं विगत कई वर्षों से लगातार पदयात्राओं के आयोजन के लिये पू. मनोज्ञसागरजी म.सा. को **पदयात्रा शिरोमणि** की उपाधि से विभूषित किया गया। जैन श्री संघ महासमुन्द, जैन सोसायटी सम्मेतशिखरजी आदि द्वारा कामली ओढाई गई। संघपतियों का भावभीना बहुमान किया गया।

हाडेचा में दीक्षा संपन्न

हाडेचा निवासी हितेशकुमार घोडा की भागवती दीक्षा 16 जनवरी 2014 को अत्यन्त हर्ष उल्लास के साथ पूज्य आचार्य श्री विजयराजेन्द्रसूरिजी म. के शिष्य पूज्य आचार्य श्री राजशेखरसूरिजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न हुई। दीक्षा के निमित्त पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया। ता. 15 जनवरी को वर्षीदान का वरघोडा निकाला गया। रात्रि में अभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ। अपने अभिनंदन के उत्तर में दिया गया दीक्षार्थी भाई का वक्तव्य बहुत सराहा गया।

पूज्य आचार्यश्री ने दीक्षा विधि संपन्न कराते हुए नूतन मुनि को मुनि राजहेमविजय नाम प्रदान किया। इस अवसर पर घोडा परिवार की विनंती स्वीकार कर पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा हाडेचा पधारे।

अनूठे चमत्कार के साथ जसोल में तीसरी वर्षगांठ संपन्न

जसोल के श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ संचालित श्री अमीझरा शांतिनाथ मंदिर की तीसरी वर्षगांठ का आयोजन पौष शुक्ल पूर्णिमा ता. 16 जनवरी 2014 को अत्यन्त हर्ष व उल्लास के साथ संपन्न हुआ। लाभार्थी बैदमुथा परिवार द्वारा ध्वजा चढाई गई। सतरह भेदी पूजा के बीच ज्योंहि दादा के शिखर पर ध्वजा चढाई गई और उसी समय अमीझरणा होना प्रारंभ हो गया।

लगभग 600 वर्षों से भी अधिक प्राचीन इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया था। इसकी प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में तीन वर्ष पूर्व संपन्न हुई थी। इस मंदिर के अधिष्ठायक देवों की जागरूकता का ही यह परिणाम है कि प्रतिष्ठा के दिन लगातार पांच घंटे तक मंदिर के हर स्तंभ से दीवार से अमीझरणा हुआ था। उसके बाद पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रा में प्रथम वर्षगांठ मनाई गई, तब भी अमीझरणे का चमत्कार हुआ था।

दूसरी और तीसरी वर्षगांठ पर पू. साधु साध्वी भगवंतों की उपस्थिति नहीं होने पर भी अमीझरणे का चमत्कार परमात्मा की साक्षात् कृपा का परिणाम है।

सकल श्री संघ में इस घटना से आनन्द मंगल छा गया है।

खान्देश में आयोजन

पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. जिनज्योतिश्रीजी म. ता. 8 फरवरी को सेलंबा पधारे, जहाँ उनका प्रवचन आयोजित किया गया तथा श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी चौरडिया की ओर से दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। वहाँ से विहार कर 9 को खापर पधारे। प्रवचन के साथ ता. 10 को श्री रमेशजी हस्तीमलजी भंडारी की ओर से श्री पार्श्व पद्मावती महापूजन तथा श्री माणिभद्र वीर हवन का आयोजन किया गया। ता. 11 को अक्कलकुआं पधारे। वहाँ अठारह अभिषेक तथा 12 फरवरी को शिखर पर ध्वजा चढाई गई तथा सतरह भेदी पूजा तथा स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। साथ ही श्री जिनदत्तसूरि पाठशाला के बालक बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पाठशाला के बालकों में पुरस्कार वितरण भी किया।

गच्छ के इतिहास का अनूठा अध्याय

पाली में चार दीक्षाऐं होगी

पूज्य मुनिराज श्री जयानंदजी म. के शिष्य पू. मुनि श्री कुशल मुनिजी म. की पावन निश्रा में पाली में एक ही परिवार की चार दीक्षाऐं वैशाख सुदि 2 ता. 1 मई को संपन्न होने जा रही है।

ता. 7 जनवरी को पालीताना में पाली से संघ सहित श्री गौतमचंदजी डाकलिया ने पूज्यश्री से अपने पुत्र, पुत्रवधू, पौत्र व पौत्री की भागवती दीक्षा का शुभ मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने 1 मई का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

मूलत: ब्यावर निवासी श्री गौतमचंदजी डाकलिया के पुत्र 36 वर्षीय मनोजकुमारजी उनकी धर्मपत्नी 35 वर्षीया सौ. मोनिकादेवी, 8 वर्षीय पुत्र भव्य एवं 12 वर्षीया पुत्री खुशी की भागवती दीक्षा संपन्न होगी।

ता. 30 अप्रेल को वर्षीदान का वरघोडा एवं 1 मई को दीक्षा होगी। पूरे परिवार की भागवती दीक्षा के इन समाचारों से सर्वत्र आनंद का वातावरण फैला है।

डुठारिया में परमात्मा का प्रवेश संपन्न

पाली जिले के डुठारिया गांव में जीर्णोद्धार संपन्न जिन मंदिर में मूलनायक श्री आदिनाथ, पार्श्वनाथ, नेमिनाथ आदि जिन बिंबों का गर्भगृह प्रवेश पूज्य आचार्य श्री विजयपद्मसूरिजी म. की निश्रा में 9 फरवरी को सानन्द संपन्न हुआ।

मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा वैशाख सुदि 12 ता. 11 मई 2014 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल के पावन सानिध्य में संपन्न होगी। समारोह का प्रारंभ 4 मई को होगा।

2 मई को पूज्यवरों का मंगल नगर प्रवेश एवं शा. महेन्द्रकुमारजी सुरेशकुमारजी छाजेड परिवार द्वारा निर्मित श्री आदेश्वर जैन आराधना भवन एवं आदेश्वर जैन भोजनशाला का उद्घाटन होगा। उद्घाटन के साथ ही भवन श्री संघ को समर्पित किया जायेगा।

आगोलाई की प्रतिष्ठा 16 अप्रेल को

जोधपुर जिले के आगोलाई गांव के श्री वासुपूज्य जिन मंदिर की प्रतिष्ठा 16 फरवरी 2014 वैशाख वदि 1 बुधवार को संपन्न होगी।

आगोलाई गांव में 1300 वर्ष पुराना जिन मंदिर है। जिसका जीर्णोद्धार पूज्य मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से संपन्न हुआ है। इस जीर्णोद्धार में शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी सहित अनेक संस्थाओं का सहयोग प्राप्त हुआ है। आगोलाई श्री संघ 50 सदस्यों के साथ प्रतिष्ठा कराने की भावभरी विनंती लेकर पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की सेवा में ता. 17 जनवरी को चितलवाना पहुँचे। उन्होंने पूज्यश्री से भावभरी विनंती की।

पूज्यश्री ने उनकी विनंती स्वीकार करते हुए वैशाख वदि 1 बुधवार ता. 16 अप्रेल का शुभ मुहूर्त प्रदान किया, जिसे श्रवण कर संघ में अत्यन्त आनंद व हर्ष छा गया। आगोलाई में मूलनायक परमात्मा आदि समस्त प्रतिमाओं का गर्भगृह प्रवेश फाल्गुन सुदि 11 बुधवार ता. 12 मार्च 2014 को पूज्यश्री की निश्रा में होगा। साथ ही उसी दिन प्रतिष्ठा संबंधी जाजम होगी, जिसमें पूजाओं, नौकारसियों आदि के आदेश प्रदान किये जायेंगे।

नवाणुं माला संपन्न

पालीताना में पूज्य मुनि श्री कुशलमुनिजी म. की निश्रा में पूजनीया साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से नवाणुं यात्रा का आयोजन श्रीमती फूलीदेवी मिश्रीमलजी भंसाली परिवार सिवाना वालों ने किया। उसका माला महोत्सव 7 जनवरी 2014 को तलेटी के दरबार में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उनका भावभीना अभिनंदन किया गया।

एल.डी. में प्रवचन

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ता. 7 जनवरी 2014 को एल. डी. रिसर्च इन्स्टीट्यूट के डायरेक्टर डॉ. श्री जितेन्द्र बी. शाह के आग्रह पर संस्थान पधारे। श्रुत रत्नाकर एवं एल. डी. के संयुक्त तत्वावधान में तत्वार्थ सूत्र पर चल रही दश दिवसीय प्रयोगशाला का आयोजन किया गया था।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूज्यश्री ने कहा– यह अनुमोदना का विषय है कि तत्वार्थ जैसे शुष्क विषय पर चल रही इस प्रयोगशाला में इतनी बडी संख्या में उपस्थिति है। निश्चित ही यह परमात्मा के प्रति, परमात्मा की वाणी के प्रति और मोक्ष के प्रति हमारी रूचि का प्रमाण है।

उन्होंने कहा– डॉ. जितेन्द्र भाई का जीवन अपने आप में एक बहुत बडा शास्त्र है। इस पंचम काल में ऐसे दिव्य साधक व्यक्तित्व है जो इतने विद्वान् होने पर भी अप्रमत्त है। इनके जीवन में त्याग, विद्वत्ता और सरलता का अनूठा संगम है। डॉ. श्री जितेन्द्रभाई ने बताया कि एक वर्ष में दो बार तत्वार्थ सूत्र पर प्रयोगशाला होती है। जिसमें हर अध्याय अलग अलग विद्वान् पढाते हैं। दसवें दिन परीक्षा का आयोजन होता है। इस प्रयोगशाला में अहमदाबाद के संभ्रांत परिवार के लोग बडी संख्या में भाग लेते हैं।

पदयात्रा संघ सम्पन्न

पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि साधु साध्वी मण्डल की निश्रा में सोनगढ़ से शत्रुंजय के त्रिदिवसीय पदयात्रा संघ का आयोजन आनंद से सम्पन्न हुआ। पूरे संघ में पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी के द्वारा प्रदत्त प्रवचनों की चर्चा रही। प्रवचन, प्रभु भक्ति आदि में उल्लास का भाव रहा। संघमाला का कार्यक्रम 20 जनवरी 2014 को अत्यन्त उल्लास से सम्पन्न हुआ। इस यात्रा संघ का आयोजन परभणी निवासी श्री गुमानमलजी नरेन्द्रकुमारजी मुथा परिवार द्वारा सम्पन्न हुआ। माला कार्यक्रम में पू. साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म., शशिप्रभाश्रीजी म., हेमरत्नाश्रीजी म., संघमित्राश्रीजी म., प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि की सानिध्यता प्राप्त हुई।

पू. उपाध्यायश्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. की निश्रा में एवं साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. की प्रेरणा से शत्रुंजय तीर्थ के लिये त्रिदिवसीय पदयात्रा संघ का आयोजन किया गया। लगभग 400 साधर्मिकों को यात्रा करवाने का लाभ अखिल भारतीय श्री सदा कुशल सेवा समिति द्वारा लिया गया। इसके मुख्य लाभार्थी वीरेन्द्रमलजी मेहता चैन्नई थे। संघ 5 फरवरी 2014 को प्रस्थान कर 7 फरवरी को पालीताना पहुँचा, जहाँ संघ माला का आयोजन हुआ।

पूज्य मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. श्री सम्मेतशिखरजी बिराज रहे हैं। वहाँ से विहार कर पावापुरी आदि कल्याणक भूमियों की यात्रा करते हुए छत्तीसगढ की ओर विहार करेंगे। वहाँ से राजस्थान की ओर विहार करने की संभावना है।

पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 ने ता. 7 फरवरी को शंखेश्वर से बाडमेर की ओर विहार किया है। वे राधनपुर, थराद, सांचोर होते हुए 16 फरवरी तक बाडमेर पधारेंगे।

पूज्य मुनि श्री कुशल मुनिजी म. ठाणा 2 ने अहमदाबाद से पाली की ओर विहार किया है। वहाँ उनकी निश्रा में 1 मई वैशाख सुदि 2 को माता पिता पुत्र व पुत्री की भागवती दीक्षा संपन्न होगी।

पूज्य मुनि श्री पीयूषसागरजी म. आदि ठाणा जावरा अष्टापद बिराज रहे हैं जहाँ उनकी निश्रा में ता. 13 फरवरी को अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 7 पालीताना श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में बिराजमान है।

पूज्य मुनि श्री मणिरत्नसागरजी म. विहार कर बाडमेर पधारे हैं। वहाँ से सियाणी पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में कुमारी पिंकी छाजेड की भागवती दीक्षा ता. 13 फरवरी 2014 को संपन्न होगी।

पूजनीया महत्तरा साध्वी श्री विनीताश्रीजी म.सा. इन्दौर में बिराज रहे हैं। उनके संयमग्रहण के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में श्री संघ द्वारा अभिनंदना समारोह ता. 17 फरवरी 2014 को आयोजित किया गया है।

पूजनीया साध्वी खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 पालीताना श्री जिन हरि विहार में बिराज रहे हैं।

पूजनीया संघ रत्ना साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ने पालीताना से इन्दौर की ओर विहार किया है। वे कलिकुण्ड होते हुए होली चातुर्मास तक इन्दौर पधारेंगे। पूजनीया साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना बिराज रहे हैं।

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गण रत्ना साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. शिखरजी से विहार कर वाराणसी पधारे हैं। वहाँ आपकी निश्रा में जिनमंदिरों के वार्षिक ध्वजारोहण का आयोजन हुआ। वहाँ से विहार कर 12 फरवरी तक लखनउ पधारेंगे। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् वहाँ से कानपुर की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बाडमेर बिराज रहे हैं। उनके वर्धमान तप की 30वीं ओली व जाप चल रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा आकोला बिराज रहे हैं। वहाँ उनकी प्रेरणा से श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी के निर्माण का निर्णय किया गया है। जिसका भूमिपूजन व खातमुहूर्त 9 मार्च को तथा शिलान्यास 10 मार्च को संपन्न होगा।

पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा मुंबई से विहार कर पूना पधारे हैं। वहाँ से हुबली की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. विहार करके विजयवाडा पधारे हैं। वहाँ उनके प्रवचन चल रहे हैं। ह्रींकार तीर्थ होते हुए तेनाली, गुन्टुर की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म., डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा अहमदाबाद दादा साहेब ना पगला बिराज रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ने पालीताना से बैंगलोर की ओर विहार किया है। वे फरवरी के अन्तिम सप्ताह में सूरत पहुँचेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 श्री शंखेश्वर बिराज रहे हैं। वहाँ से वे अहमदाबाद की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 ने बडौदा से खान्देश की ओर विहार किया है। वे सेलंबा, खापर, अक्कलकुआं, वाण्याविहिर, तलोदा, शहादा, नंदुरबार, दोंडाइचा, धूले होते हुए नाशिक की ओर विहार कर रहे हैं, जहाँ उनकी प्रेरणा से निर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 18 जून को संपन्न होगी।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना में बिराज रहे हैं। उनका आगामी चातुर्मास जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुंबई में निश्चित किया गया है।

पूज्यश्री का आगामी कार्यक्रम

- 5 मार्च बाड़मेर कल्याणपुरा में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- 16 अप्रेल आगोलाई में प्रतिष्ठा
- 11 मई डुठारिया में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- 18 जून नाशिक में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- 6 जुलाई इचलकरंजी चातुर्मास प्रवेश

सादर श्रद्धांजली

सडक दुर्घटना में स्वर्गवास

श्रमण संघ के सलाहकार मुनि श्री विनय मुनिजी म. एवं मुनि श्री निरंजनमुनिजी म. जोधपुर नागोर मुख्य मार्ग पर जब विहार कर रहे थे तब एक टेंकर से टक्कर हो जाने के कारण मुनि श्री निरंजनमुनिजी म. का घटनास्थल पर ही स्वर्गवास हो गया। यह दुखदायी घटना 31 जनवरी शुक्रवार को सुबह सवा सात बजे के आसपास घटी। पूज्य विनयमुनिजी म. को अस्पताल में भर्ती किया गया है।

सडक दुर्घटना में एक योग्य युवा मुनि को संघ ने खो दिया है। समाज के कर्णधारों को इस प्रकार लगातार हो रही दुर्घटनाओं के संबंध में विचार करना चाहिये ताकि ऐसी दुर्घटनाओं का पुनरावर्तन न हो।

श्री अजयजी पावेचा

रतलाम निवासी श्री अजयजी पावेचा का ता. 8 जनवरी 2014 को स्वर्गवास हो गया। वे मात्र 50 वर्ष के थे। वे रतलाम के जाने माने चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट थे। वे पूज्य उपाध्याय श्री के परम भक्त थे। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी शोभाजी के साथ रतलाम में जिन मणि विद्या विहार के नाम से स्कूल स्थापित की थी। शिक्षा के क्षेत्र में इस स्कूल का अपना एक विशिष्ट नाम है।

उनके स्वर्गवास से समाज व परिवार में एक बहुत बडा शून्य उभरा है। परमात्मा व दादा गुरुदेव से प्रार्थना है कि वे परिवार को यह दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करें। जहाज मंदिर परिवार की ओर से श्रद्धांजली समर्पित है।

श्री मोहनलालजी बागरेचा

गढसिवाना-बैंगलोर निवासी श्री मोहनलालजी बागरेचा का ता. 16 जनवरी 2014 को स्वर्गवास हो गया। 65 वर्ष की उम्र होने पर भी वे धर्म क्षेत्र में अत्यन्त सक्रिय थे। स्वाध्याय में उनकी बहुत रूचि थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर से श्रद्धांजली समर्पित है।

श्री सोहनलालजी चौधरी

गढसिवाना-अहमदाबाद निवासी श्री सोहनलालजी चौधरी का ता. 7 फरवरी 2014 को स्वर्गवास हो गया। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में आपका अपूर्व योगदान रहा है। सिवाना में अस्पताल का निर्माण आपकी ओर से किया गया। और भी कितने ही कार्य आपके द्वारा संपन्न हुए। नाकोडाजी के आप ट्रस्टी रहे। महावीर आराधना केन्द्र, कोबा के आप अध्यक्ष थे। आपके स्वर्गवास से समाज में बहुत बडी क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से श्रद्धांजली समर्पित है।

रतन बागवान फूल डेकोरेशन
व गार्डन (बगीचा) कॉन्ट्रेक्टर
शादी, पार्टी, प्रतिष्ठा में भव्य फूलों की सजावट की जाती है व पेड पौधो के होलसेल विक्रेता
दिपक रंगोली, नेट, कपड़ा चट्टाई बास, चैनल बुका, आर्टीफिसियल सजावट की जाती है
तलबी तालाब के पास, कृषि मण्डी रोड़, भीनमाल-343029 (राज.)
मो. 94143 73350, 9660532272, फोन 7568305484 (घर)

जिनशासन के गौरव के दानवीर दीपचंद गार्डी का निधन

मुम्बई। प्रसिद्ध समाजसेवी व देशभर में 500 से ज्यादा शिक्षण संस्थाओं के सहयोगी व संस्थापक दानवीर दीपचंद गार्डी का मुम्बई में निधन हो गया। वे कुछ दिनों से बिमार थे। 99 वर्षीय श्री गार्डी अपने अंत समय तक समाज के लिए सक्रिय रहे। उन्होंने जिस किसी संस्था का हाथ पकड़ा उसे आर्थिक रूप से मजबूत बनाकर सुचारू रूप से चलाने की कोशिश की। श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट जहाज मंदिर की ओर से उन्हें उनके योगदान हेतु सम्मानित करते हुए जैन पद्मश्री से अलंकृत किया था।

उपराष्ट्रपति पद किया था अस्वीकार

श्री गार्डी के कार्यों व दानवीरता से प्रेरित होकर उन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने उन्हें उपराष्ट्रपति पद स्वीकारने का निवेदन किया था काफी सोच विचार कर उन्होंने इसके लिए मना कर दिया और कहा कि इससे मेरे और लोगों के बीच दूरी बढ़ेगी इसलिए उपराष्ट्रपति से अच्छा है कि मैं मुनीम बनकर लोगों की सेवा करता रहु। 25 अप्रैल 2014 को श्री गार्डी 100 वर्ष पूर्ण करने जा रहे थे।

श्रीमती सोनी देवी कटारिया

बिलाडा निवासी श्री बंशीलालजी कटारिया की धर्मपत्नी श्रीमती सोनी देवी कटारिया का 2 फरवरी को स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म राजस्थान की थली प्रदेश के करनू प्रान्त में चौरड़िया परिवार में हुआ था। आपके तीन पुत्र व छह पुत्रियां थी। सन्तान को जन्म के साथ अच्छे संस्कार भी दिए। आपकी कोख से जन्मी पुत्री राजकुमारी सं. 2085 ज्येष्ठ सुद बारस को बाड़मेर की धरती पर आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के हस्तकमलों से दीक्षित हुई। गुरूवर्या पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका सुलोचनाश्रीजी म.सा. का शिष्यत्व प्राप्त किया। अपनी पुत्री को जिनशासन में सौंपकर अपने कुल का नाम व गांव, खरतरगच्छ का नाम उज्ज्वल किया। आपके पतिदेव स्वभाव से शान्त व उदारमन थे। इन्हीं संस्कारों व गुणों से आपने अपनी सभी सन्तानों को पल्लवित व पुष्पित किया।

आपने जीवन में अठाई, पंचमी तिथि, 108 पार्श्वनाथ के एकासने व अन्य तपश्चर्या की। साधु-साध्वीजी भगवन्तों की सेवा भक्ति में सदैव तत्पर रहती थी। आपने भारत भर के अनेक तीर्थों की यात्रा की। अपनी पुत्रवधु के वर्षीतप के पारणे पर पालीताणा का संघ निकाला था। गत दस वर्षों से आपका स्वास्थ्य स्वस्थ नहीं था। आपकी दोनों किडनियों ने कार्य करना बन्द कर दिया था। सप्ताह में दो बार डायालिसिस चल रहा था, फिर भी हिम्मत गजब की थी। उनकी अन्तिम भावना अपनी बेटी म.सा. पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. को बिलाड़ा चातुर्मास करवाने की अधूरी रह गई।

सं. 2070 माघ सुद तृतीया के दिन मांगलिक श्रवण किया। नमस्कार महामन्त्र की धुन के बीच लगभग दस बजे समाधि पूर्वक इस नश्वर देह का त्याग कर दिया। पांच वर्ष पूर्व ही चौरासी लाख जीव राशि से क्षमायाचना आदि अनुष्ठान कर लिए थे। पुण्यात्मा के प्रति श्रद्धांजली समर्पित है।

तिरुपातुर में भवन उद्घाटन एवं 525 आयंबिल का पारणा संपन्न

ता. 02 फरवरी 2014 को तिरूपातुर नगर में श्री जिनदत्त-कुशल आराधना भवन का उद्घाटन समारोह त्रिदिवसीय रत्नत्रयी महोत्सव के साथ संपन्न हुआ। प.पू. मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-9 की पावन निश्रा में उत्सव को लाभार्थी श्रीमान् पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड़ परिवार ने बड़े ही उल्लासपूर्वक मनाया। ता. 01 फरवरी 2014 को बड़े ही ठाठ पूर्वक श्रीमान् प्रेमचंदजी गजेन्द्रकुमारजी भंसाली परिवार द्वारा सिद्धचक्र महापूजन पढाया गया। ता. 02 फरवरी 2014 को सुबह 6 बजे से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। जुलूस को शानदार बनाने हेतु चैन्नई से धर्मनाथ मंदिर, चूलै मंदिर, जूना मंदिर ट्रस्ट, बिलीवाकम, बैंगलोर बसवन गुड़ी संघ, हुबली संघ, बीजापुर संघ, गदग संघ, तिरछी संघ, ईरोड संघ, वाणियम वाडी संघ, आम्बुर संघ, सोलापुर, मदुराई से प्रियनंदिता श्री जी म.सा. के सांसारिक परिवार ने पधार कर जिनशासन की शोभा में अभिवृद्धि की।

बीजापुर-गदग तिरूपातुर आदि संघों से चातुर्मास विनंती एवं हुबली संघ से वर्षीतप पारणा की विनंती की गई। भवन उद्घाटन के लाभार्थी शा. केवलचंदजी दुग्गड़ परिवार, मुख्य जिनदत्त हॉल के लाभार्थी शा. गौतमचंदजी पारसमलजी कवाड़ परिवार, जिनकुशल सूरि हॉल के लाभार्थी शा. ललीतकुमारजी निहालचंदजी ललवाणी परिवार, जिनचंद्रसूरि भोजनशाला के लाभार्थी शा. तिलोकचंदजी महावीरचंदजी गुलेच्छा परिवार, कमरों के लाभार्थी कुशालचंदजी गुलेच्छा, देवराजजी गुलेच्छा, गौतमचंदजी गुलेच्छा, राजेन्द्रकुमारजी वैद, प्रेमचंदजी भंसाली, विजयराजजी कोचर, रणजितजी गुलेच्छा, प्रदीपजी पारख, कमलजी गुलेच्छा, पारसमलजी गुलेच्छा, रतनचंदजी कवाड़, गौतमचंदजी कवाड़, सुरेशजी हिरावत परिवार ने लाभ लेकर इस भवन को शोभायमान किया। इसी कार्यक्रम में चार चांद लगाने हेतु कलकत्ता से सुरेन्द्र बंगानी, पाटन से कश्यपभाई एवं बैंगलोर से रोहितभाई तथा चैन्नई से मोहन-मनोजजी गुलेच्छा आदि सभी ने कार्यक्रम को सफल बनाया। स्वामी वात्सल्य का लाभ शा. बाबुलालजी मुथा परिवार ने लिया।

कुशल वाटिका युवा परिषद की बैठक सम्पन्न

बाडमेर 25 जनवरी को कुशल वाटिका युवा परिषद की बैठक रिषभ एजेन्सी में अध्यक्ष केवलचंद छाजेड की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इसमें आगामी महोत्सव में उपस्थित होने हेतु विचार-विमर्श कर ज्यादा से ज्यादा संख्या में भाग लेने हेतु निर्णय किया गया। बैठक में संरक्षक सोहनलाल बोथरा, उपाध्यक्ष मुकेश बोहरा, सचिव मदन बोहरा, सहसचिव नरेश लुणिया, कोषाध्यक्ष राजेन्द्र वडेरा, संगठन मंत्री सुनिल बोथरा, रमेश मालू, गोतमचंद मालू, रमेश सिंघवी, पुखराज म्याजलार, गौतम सियाणी, राकेश सिंघवी, भुरचंद श्रीश्रीमाल, भरत छाजेड, महावीर लुणिया, स्नेह वडेरा, विक्रम सिंघवी आदि सदस्य उपस्थित थे।

बाडमेर कल्याणपुरा में पार्श्वनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा 5 मार्च को

थार नगरी बाड़मेर के कल्याणपुरा महावीर चौक स्थित पार्श्वनाथ जिनालय की अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प. पू मरूधरमणि उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा की पावन निश्रा में 5 मार्च 2014 को होगा।

पांच दिवसीय कार्यक्रम में पूजाएं, भगवान के राज दरबार की प्रस्तुतियां, 4 मार्च को दिक्षा कल्याणक का भव्य वरघोडा व 5 मार्च को अजनंशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव का विधि विधान होगा। इस कार्यक्रम में भारत के सुप्रसिद्ध जैन संगीतकार नरेन्द्र वाणीगोता मुम्बई वाले अपनी प्रस्तुतियां देंगे।

प्रेषक- बाबुलाल सेठिया

पालिताना में संघ माला सम्पन्न

बालोतरा खरतरगच्छ संघ द्वारा आयोजित एवं पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. द्वारा प्रेरित वर्षीतप के आराधकों को बस द्वारा तीर्थ यात्रा करवाने का लाभ श्री गौतमचंदजी जेठमलजी आदि समस्त चोपड़ा परिवार द्वारा लिया गया। इनकी संघमाला का कार्यक्रम पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., मनितप्रभसागरजी म. की निश्रा में 27 जनवरी 2014 को सानंद सम्पन्न हुआ। पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. ने पदयात्रा संघ की महिमा का वर्णन करते हुए कहा- छह 'री' का पालन करते हुए परमात्मा ऋषभदेव एवं शत्रुजय की यात्रा करना अनन्तर-परम्पर मुक्ति का साधन बनता है।

गुरुगुण कृपा स्मारिका का विमोचन

बाड़मेर राष्ट्रसंत अचलगच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री गुणसागरसूरीश्वरजी म.सा. के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में ''जैन परिवार'' पाक्षिक द्वारा प्रकाशित ''गुरूगुण कृपा'' स्मृति ग्रन्थ का विमोचन गुजरात विधानसभा के सदस्य विधायक श्री ताराचंदभाई छेड़ा ने किया।

उपरोक्त कृति में उनके संपूर्ण जीवन यात्रा का उल्लेख किया गया हैं। ग्रन्थ सम्पूर्ण आर्ट पेपर पर बहुरंगी कलेवर के साथ प्रकाशित किया गया हैं। ग्रन्थ का विमोचन करते हुए विधायक श्री ताराचंदभाई छेड़ा ने कहा कि पूज्य गुरुदेव ने प्राणी मात्र के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। इस अवसर पर भंवरलाल मालू, प्रकाशचंद सिंघवी, मांगीलाल सिंघवी, केवलभाई, अंकितभाई गाला सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रेषक- लूणकरण सिंघवी

जहाज मंदिर पहेली-91 का सही उत्तर

1. नयसार
2. प्रथम देवलोक
3. मरीचि
4. कुलमद करना
5. कौशिक ब्राह्मण
6. ईशान देवलोक में देव
7. अग्निभूति
8. विश्वभूति
9. शय्यापालक के कानों में कथीर
10. सप्तम नरक
11. केशरी सिंह
12. प्रियमित्र चक्रवर्ती
13. नंदन मुनि
14. दशम देवलोक
15. देवानंदा की कुक्षि में अवतरण
16. त्रिशला द्वारा जन्म
17. मेरूपर्वत पर अभिषेक
18. प्रभु द्वारा पाठशाला गमन
19. यशोदा के साथ विवाह
20. प्रियदर्शना का जन्म
21. मन: पर्यव ज्ञान की प्राप्ति
22. पांच प्रतिज्ञा
23. शूलपाणि यक्ष उपद्रव
24. दस स्वप्न दर्शन
25. चण्डकौशिक द्वारा उपद्रव
26. संगम के उपसर्ग
27. तेरह बोल का अभिग्रह
28. चंदनबाला द्वारा दान
29. कानों में खीले ठोकना
30. केवलज्ञान की प्राप्ति
31. गणधर स्थापना
32. गोशालक द्वारा लेश्या प्रयोग
33. सोलह प्रहर की अखण्ड देशना
34. पावापुरी में निर्वाण।

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार-कलावती बरड़िया-महासमुन्द

छह प्रेरणा पुरस्कार -शोभा कोटडिया-त्रिची, निशा डाकलिया-जगदलपुर, कमलेश छाजेड़-कोटा, विनीता पटवा- जालोर, विमला गोखरू-अजमेर, मधु जैन-ऊटी

प्राप्त उत्तर पत्र-साध्वी विशालप्रभाश्रीजी, साध्वी दीप्ति प्रज्ञाश्रीजी, साध्वी दिव्यादर्शनाश्रीजी

इनके उत्तर पत्र सही थे-विमला संकलेचा-हैदराबाद, चित्रा झाबक-बड़ौदा, मनीषा लूणिया-ऊटी, डॉ. सुनीता जैन-जयपुर, सीमा जैन-जयपुर, कैलाश पारख-जालोर, ऋषभ जैन-जालोर, पांची बाई गोलेच्छा-सेलम, नीता खेमसरा-खाचरौद, सुमित्रा छाजेड़-हैदराबाद, श्वेता बाफना-कोट्टूर, भंवरी देवी गोलेच्छा-ऊटी, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, दिनाशाह-बड़ौदा, भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, प्रमिला कोठारी-ऊटी, फीणी बेन बाफना-कोट्टूर, सविता जैन-मुम्बई, सीमा चौरड़िया-अमरावती, सोहनबेन झाबक-बड़ौदा, संगीता गोठी-बैंगलोर, मधु खवाड़-मदनगंज-किशनगढ़ ।

इन उत्तरपत्र आंशिक रूप से त्रुटिपूर्ण थे-सुषमा धारीवाल-जयपुर, सुंदरी बाई राखेचा-त्रिची, पिस्ता गोलेच्छा-जयपुर, भाविक पारख-चैन्नई, सोनाक्षी सुराणा-जहाजपुर, लता भंसाली-जयपुर, कणिका जैन-बूंदी, भव्य-आर्ची बांठिया-जयपुर, श्वेता कोचर-तलोदा, निर्मल धारीवाल-कोट्टूरू, मांगीलाल बोहरा-तलोदा, शैली जैन-जयपुर, एकता कोचर-अक्कलकुवा, चंदा ढढ्ढा-चैन्नई, निर्मला सिसोदिया-जयपुर, संगीता गोलछा-कोण्डागांव, धर्मचंद जैन-कुरिंजीपाड़ी, भावना गोखरू-विजयनगर, लीलादेवी भूरट-होस्पेट, प्रीति बांठिया-हैदराबाद, सुशीला भण्डारी-कोटा, निर्मला जैन-उदयपुर, गौतमचंद बैद-कुरिंजीपाड़ी, मोहिनी देवी पारख-धमतरी, कुशल संकलेचा-अक्कलकुवा, संगीता जैन-बड़ौदा, रोहित संकलेचा-नलखेड़ा, चन्द्रा रांका-चैन्नई, हर्षित ललवाणी-तिरूपात्तुर, शोभा वैद-पनरूटी, शकुन्तला कांकरिया-हैदराबाद, मोहनलाल बागरेचा-बैंगलोर, भूरचंद मालू-जोधपुर, शान्तिदेवी गांधी-जोधपुर, अशोक विनायकिया-हैदराबाद, सरला भंसाली-खेतिया, आदेश बोहरा-तलोदा, मंगलाबाई चतुरमुथा-सारंगखेड़ा

विलम्ब से प्राप्त उत्तर पत्र- पुष्पा टांटिया-जगदलपुर, हर्षल नाहटा-शहादा, कुसुम बेंगानी-रायपुर, किशोर चौपड़ा-सिन्धनूर, उम्मेदराज धारीवाल-जयपुर, विनीता बच्छावत-फलौदी, स्नेहा चौरड़िया-नाशिक ।

जहाज मन्दिर पहेली 94

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

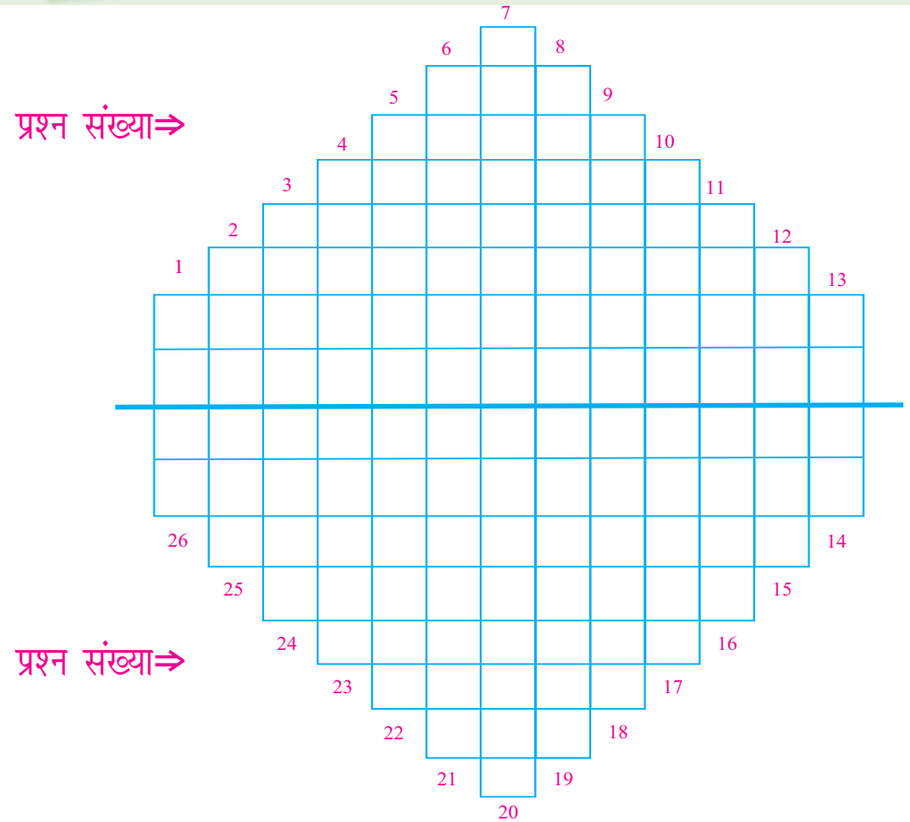

ऊपर बने हुए बॉक्स उत्तर के अक्षरों की संख्या में बने हुए हैं। उनमें प्रश्नों के उत्तर अंकित करते हुए प्रश्न के सम्मुख भी उत्तर अवश्यमेव अंकित करें।

1.गौचरी सम्बन्धी एषणा के कितने दोष? .....

2. चारित्र मोहनीय कर्म के दो भेदों में से एक? .....

3. घेवर खाते हुए केवली कौन बने? .....

4. पद्मनाभ स्वामी के गणधर बनने वाले राजा? .....

5. सिंदूर प्रकर के रचयिता?.....

6. किस विमान के देव-देवी नियमत: सम्यक् दृष्टि?.....

7. पुष्करवर द्वीप का प्रमाण? .....

8. हेमचन्द्राचार्य ने कितने श्लोक रचे? .....

9. सर्वाधिक साहित्य रचना करने वाला गच्छ? .....

10. परमात्मा महावीर ने किसे सर्प को प्रतिबोध दिया? .....

11. छप्पन क्या है? .....

12. कौनसा जन्म दुर्लभ है? .....

13. साधु के लिये खरीद कर लाया आहार लेने से लगने वाला दोष? .....

14. अढ़ी द्वीप में जघन्यत: कितने तीर्थंकर होते हैं? .....

15. गणधर इन्द्रभूति किस गोत्र के थे .....

16. मंखली पुत्र किसका उपनाम था? .....

17. इरियावही करते हुए केवली कौन बने? .....

18. किसने पांच सौ चोरों को प्रतिबोध दिया? .....

19. जिनप्रभसूरि कृत कल्पसूत्र टीका? .....

20. जीव रक्षा हेतु किसने प्राणों की बलि दी? .....

21. नरवर्म राजा को प्रतिबोध किसने दिया? .....

22. शय्यातरी के रूप में प्रसिद्ध? .....

23. सबसे बड़ा आवश्यक कौनसा? .....

24. श्रेणिक क्या खरीदने के लिये पूणिया श्राविक के पास गये? .....

25. बाह्य निमित्त बिना होने वाला सम्यक्त्व? .....

26. चन्दनबाला को किसने भूगर्भ में बंद किया?.....

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 मार्च तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल अप्रेल में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर जहाज मंदिर में छपे फार्म में ही भरकर भेजे। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार नहीं की जायेगी।
7. प्रेषक पहेली का उत्तर जहाज मंदिर पत्रिका के कार्यालय पर भारतीय डाक से ही पोस्ट करें।
8. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
9. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-

शा. सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया (छबड़ा) ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन [ ][ ][ ][ ][ ][ ] जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर [ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

जहाज मंदिर पहेली 92 का सही उत्तर

1. प्रभास स्वामी	2. तमस्तम: प्रभा	3. सौधर्म देवलोक	4. दिक्कुमार	5. आचारांग
6. दिसन्तु	7. तेतलीपिता	8. जय वीयराय	9. स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत	10. काल
11. पारिष्ठापनिका समिति	12. कृष्णलेश्या	13. स्वयंभूरमण समुद	14. अजितवीर्यस्वामी	15.कार्मण शरीर
16. भरत चक्रवर्ती	17. विजय विमान	18. केवलज्ञान	19. सामायिक	20. लोभ
21. मन:पर्याप्ति	22. श्री कृष्ण	23. महावीर स्वामी-वर्धमान स्वामी		24.स्थावर, यशनाम कर्म
25. दानान्तराय	26. त्रसकाय	27. दु:खम दु:खम	28. जीव (नवतत्त्व)	29. सम्यक्त्व
30. अकबर प्रतिबोधक दादा श्री जिनचन्द्रसूरि		31. अन्तराय	32. प्राणिधान त्रिक	

33. निर्धूम अग्नि (चौदह स्वप्न), सिंह (लांछन)

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुररस्कार- सरला गोलछा-लालबर्रा

छह प्रेरणा पुरस्कार-

हर्षित ललवाणी-तिरूपात्तुर, सरोज गोलछा-राजनांदगांव, दर्शन कोठारी-अमलनेर, विनोद डाकलिया-जदलपुर, डॉ. सुनीता जैन-जयपुर, स्नेहा चौरड़िया-नाशिक

इनके भी उत्तर पत्र प्राप्त हुए- मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी, साध्वी विशालप्रभाश्रीजी, साध्वी दिव्यदर्शनाश्रीजी, साध्वी दीप्तिप्रश्राश्रीजी, स्थितप्रज्ञाश्रीजी।

इनके उत्तर पत्र त्रुटिपूर्ण थे- पांचीबाई गोलेछा-सेलम, मोहनलाल बागरेचा-बेंगलोर, नीतिन बोथरा-इन्दौर, अशोक विनायकिया-चैन्नई, निहालचंद जैन-नोयड़ा, सांकलचंद भंसाली-बैंगलोर, आदेश जैन-तलोदा, मांगीलाल जैन-तलोदा, दीप डोसी-मंदसौर, नरेन्द्र कोचर-भाईन्दर, जयश्री कोठारी-भाईन्दर, मोहिनीदेवी पारख-धमतरी, चन्द्रा कोचर-भाईन्दर, मंगला भंसाली-शहादा, सुचित्रा भंसाली-नोयडा, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, सुन्दरी बाई राखेचा-त्रिची, अदिति सोलंकी-ब्यावर, मनोहरलाल झाबक-कोटा, शकुन्तला कांकरिया-हैदराबाद, भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, सरसलता जैन-दिल्ली, मनीष डोसी-ब्यावर, राजरानी मेहता-जयपुर, आशा छाजेड़-जोधपुर, निध्यान गुलेच्छा-जोधपुर, गौतमचंद बैद-कुरिंजीपाड़ी, मंगलाबाई चतुरमुथा-सारंगखेड़ा, कुसुम बेंगानी-रायपुर, विनीता बच्छावत-फलोदी, सरला बोहरा-कुरिंजीपाड़ी, निर्मल धारीवाल-कोट्टूर, अजिता नाहटा-शहादा, ताराबाई कोठारी-भाईन्दर, आलोक चौरड़िया-राजनांदगांव, बाबूलाल भूरट-होस्पेट, सोहनबेन झाबक-बड़ौदा, ममता गोलछा-कोण्डागांव, मधु जैन-ऊटी, सविता जैन-मुम्बई, हर्षल नाहटा-शहादा, संगीता गोठी-बैंगलोर, इन्द्रादेवी संकलेचा-हैदराबाद, शोभा वैद-पनरूटी, समर्थ गुलेच्छा-तिरूपात्तुर, विजय संकलेचा-मालपुरा, चन्द्रसिंह जैन-उदयपुर, मधु खवाड़-मदनगंज, भंवरी गुलेच्छा-ऊटी, जयश्री कोठारी-ऊटी, सुमित्रा छाजेड़-हैदराबाद, रोहित संकलेचा-नलखेड़ा, मनीषा लूणिया-ऊटी, प्रेम दुगड़-जयपुर, भूरचंद मालू-जोधपुर, सुशीला भण्डारी-कोटा, संगीता गोलछा-कोण्डागांव, मीनू नाहटा-शहादा, निर्मला जैन-उदयपुर, शोभा कोटडिया-त्रिची, कमलेश भण्डारी-जयपुर, विमला देवी-हैदराबाद।

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

जटाशंकर

डॉक्टर जटाशंकर के घर में उसका टेलिविज़न खराब पड़ा था। उसने मैकेनिक को फोन करके घर आकर टी.वी. सुधारने का आग्रह किया।

मैकेनिक घटाशंकर अपने औजारों के साथ घर आया। और लगभग पन्द्रह मिनट की मेहनत के बाद टी. वी. ठीक कर दिया। टी.वी. ठीक करने के मेहनताने के रूप में उसने 200 रूपये मांगे।

डॉक्टर जटाशंकर को यह राशि बहुत अधिक लगी। मात्र पन्द्रह मिनट का कार्य और दो सौ रूपये!

उसने कहा- भैया! मैं तो मरीज को देखता भी हूँ, दवाई भी देता हूँ! पर रूपये केवल पचास लेता हूँ! दो सौ रूपये बहुत ज्यादा है।

घटाशंकर ने कहा- डॉक्टर साहब! मैं अपने काम की गारंटी भी देता हूँ! जबकि आपकी दवाई की कोई गारंटी नहीं होती। ठीक हो भी जाय और नहीं भी हो!

यंत्र की गारंटी है। मानव के द्वारा निर्मित साधनों की गारंटी है, पर खुद मानव की गारंटी नहीं है। माटी का घडा बिना ठोकर के नहीं फूटा करता। जबकि आदमी बिना ठोकर के ही परलोक के लिये रवाना हो जाता है। इस क्षणिक दशा को देख कर हमें शाश्वत तत्त्व को प्राप्त करने का पुरूषार्थ करना चाहिये।

श्री शंखेश्वर महातीर्थ का पैदल संघ एक नजर में

श्री चितलवाना से श्री शंखेश्वर तीर्थ छ री पालित संघ संपन्न

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

श्री चितलवाना से
श्री शंखेश्वर तीर्थ
छ री पालित संघ संपन्न

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in www. jahajmandir.com www.jahajmandir.blogspot.in

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408